कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

महाराणा प्रताप

अङ्क पहला | दृश्य पहला

स्थान मार्ग

(बालिकाओं का ईश्वर प्रार्थना)

मंगलाचरण

जय जय भारत देश

शरण गहे की लाज तुही है काटो सकल कलेश ॥
आज सभी ये भारत वासी हुये शरण में पेश ।
ध्वजा ये लहराता है शिखर पर मिटा राग और द्वेश ॥
जन मन रंजन कर दुख भंजन टेरत तुम्हें हमेश ।
इस 'वेचैन' देश का स्वामी मेटो सकल कलेश ॥

(बालिकाओं का प्रस्थान एक ओर से सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्र—जिसके केवल नाम से कटते कष्ट अपार ।
हम सबकी रक्षा करें वेही कृष्ण मुरार ॥

आहा आज विजय दशमी का महोत्सव है, यही तो विजय दशमी है जिसमें भगवान रामचन्द्र ने रावण जैसे योधा का संहार किया था, और सूर्य वंश को सूर्य के समान चमका दिया था, तब से क्षत्रिय जाति इस विजय दशमी को बड़ी धूम धाम से मनाती है और इस अवसर पर वीर गण एक स्थान पर इकट्ठे होते थे तब उनके बल की परीक्षा की जाती थी।

(दूसरी ओर से नटी का प्रवेश)

नटी—हां स्वामी आप सत्य कहते हैं आज भी वोही विजयद
का त्यौहार है, देखो नाथ इस समय दशमी की
अपार है आज्ञा सुनाइये कि इस समय कौनसा आ
रचनें का विचार है ?

दृश्य कोई ऐसा दिखाओ दास्तां सब दूर हो।
वीर हो जायें सभी और वीरता भरपूर हो॥

सूत्र—हां प्राणेश्वरी तुम्हारा विचार धन्य है आज श्रोता
को कोई ऐसा दृश्य नाटक द्वारा दिखाया जाय, ि
इस गिरी हुई हिन्दू जाति को होश आये, आपस
और संगठन कर के दासता को हटादें और
अपना भगवा रङ्ग का ध्वज इस सारे संसार में फ
और समस्त धर्मानुयायियों को अपने वीर होने का
देकर उनके हृदय को कम्पादें।

वीर शिवा जी की तरह से वीर भारत वीर हों।
विश्व में विजयी हों जंगी हों रणधीर हों॥
भगवा रंग का ध्वज ये फहरादें सकल संसार में।
संगठन कर प्रेम से यह नित्य रहें खुद प्यार में॥

नटी—तो स्वामी कृपा कर शीघ्र आज्ञा सुनाइये, इस हिन्
की चेता कर इनका कर्तव्य समझाइये, जिस हिन्दू ज
संसार को ज्ञान दिया आज वो स्वयं अज्ञानी है
हिन्दू जातिं की साक्षी मिश्र के मिनार दे रहे हैं।

मृग के मस्तक में कस्तूरी है पर नहीं ध्यान है।
ढूंढता इत उत फिरे मूर्ख है और अज्ञान है॥
बस इसी भान्ति ये हिन्दू जाति की सन्तान है।
अपने गौरव को भुला कर आप खुद हैरान है॥

-हां हृदयेश्वरी वास्तव में इन वीरों को अपने बल वीरता का उनमान नहीं इन्हें अपने पूर्वजों के आदर्श का ध्यान नहीं, यदि इन्हें ध्यान हो जाये तो यह स्वतन्त्र हो जायें, आपस में प्रेम व संगठन कर के इस भारत माता को स्वतन्त्र कर दिखायें, परन्तु छूआछात के भूत को हटा कर एक माता की सन्तान होकर दिखादे दुनिया तो क्या यह त्रिलोकी को भी हिलादें। परन्तु..........................

--परन्तु क्या।

—परन्तु अपने राष्ट्र को आए दिन की हानि से बचाने के लिए संगठन की आवश्यकता है।

—हां स्वामी ऐसा होना असम्भव है।

—असम्भव नहीं प्राणेश्वरी मनुष्य के लिए कोई बात व कोई काम असम्भव नहीं, ऐसा कहना सर्वथा भूल है, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि महात्मा गांधी का कहना है कि इस असम्भव शब्द को हिन्दी के कोश से निकाल दिया जाय, क्योंकि मनुष्य के लिए कोई असम्भव नहीं है।

यदि मनुष्य चाहे तो पा लेता है उस भगवान को।
धर्म की वेदी पर मिटना चाहिये हर जवान को॥

—धन्य है स्वामी धन्य है आपकी बुद्धि धन्य है, हां तो आज्ञा सुनाइये कौनसा नाटक रचाया जाय शीघ्र बता-

इये स्वामी ये अवश्य होश में आजायेंगे, जब आप इन
पूर्वजों के आदर्श का चित्र इन्हें खींच कर दिखायेंगे।

सूत्र--अच्छा तो जाओ पात्रों को समझाओ, और आज श्रे
समाज को भारत भूषण कविरत्न मास्टर न्यादरसिंह 'बेचै
देहलवी की लेखनी द्वारा लिखा हुआ मेवाड़ाधिपति म
राणा प्रताप दिखाओ।

थ़ा वोही प्रताप सिंह जिन वीर व्रत धारण किया।
मरते दम तक उस वीरने उस व्रतका पालन किया॥
धर्मान्यायों को दिखलाया था जां पर खेल कर।
मान अकबर के घटाये निर्भय जां को पेल कर॥

नटी--आहा स्वामी खूब याद दिला दिया, वोही प्रताप
जिसने यवन शासन के होते हुए भी यवनों के हृदय को हि
दिया। अच्छा स्वामी जाती हूं, आपकी आज्ञा बजाती
और पात्रों को समझा कर आज महाराणा प्रतापसिंह
का नाटक रँगमञ्च पर रचाती हूं।

(प्रस्थान)

सूत्र--यदि मेरा प्रयास सफल होजायगा तो हिन्दू जाति
गौरव पुनः इस भूमंडल में सूर्य के समान चमक जायग
इन वीरों को होश होते ही सारी दुनिया पर वोही भ
रंग की ध्वजा लहरायेगी।

संगठन यदि होगया तो होगये आजाद हम।
राष्ट्र की हो उन्नति होजायेंगे आबाद हम॥

(एक ओर प्रस्थान)

ङ्क पहला   दृश्य दूसरा

जगमल का दरबार

(जगमल का राज सिंहासन पर बैठे दृष्टि आना दरबारी गण बैठे हुए हैं, नृत्यकाओं का नृत्य गायन)

गायन

कोयलिया अनोखी कूक सुनावे मीठे बोल बोल बोले।
हां हां मीठे बोल बोल बोले ॥
पवन पुरवइया चले सननन वे खुश गवार मन भावे।
बुलबुल खुमरी की चहक महकने दिलको किया तसखीर ॥
मीठे बोल बोल बोले। हां हां मीठे बोल बोले ॥

(प्रस्थान)

मल--आहा आज मैं ही मेवाड़ का राणा हूँ, जो चाहूँ बनाऊं मुझे कोई रोक नहीं सकता मैं सारे राज्य को उलट पलट कर डालूं।

क्या मुझे चिन्ता है सारे राज्य का राजा बना।
चाहूँ सो ही कर दिखाऊं कौन करता है मना ॥

टसिंह—सत्य है दया निधान।

पट—ठीक है कृपा निधान।

०—लोग कहते हैं कि महाराजा उदयसिंह ने बड़ा अनर्थ किया जो बड़े भाई प्रतापसिंह के होते हुए छोटे पुत्र को राज्य सौंप दिया।

०—(कुछ सोच कर) भला राज्य मुझे न देते तो और किसे

देते, राजा बनने के योग्य मुझे जाना, तभी तो उन
मन ने माना, देखो चोपट सिंह हमारी आज्ञा बजाओ
मुझे राजा मानने से इन्कार करे उसे बन्दी कर बन्दी
खाने की हवा खिलाओ कि वो इस राज्य की सीमा
बाहर हो जाय।

चोपट०—सत्य है कृपा निधान।

खट०—ठीक है कृपा निधान।

(चन्द्रावत व प्रतापसिंह का प्रवेश)

चन्द्रा—कौन कहता है कि यह बात सत्य है, मैं ये कहने के लि
तैयार हूं कि महाराज उदयसिंह स्वर्गीय ने बड़े पु
महाराणा प्रताप को राज्य न देकर एक नातजुरबेकार ज
मल को दिया है, ये उन्होंने बड़ा अनर्थ किया है। जगम
सिंहासन से नीचे उतर आइये और जिन का हक है
जिनकी प्रतीक्षा इस मेवाड़ का बच्चा २ कर रहा है
स्वयं ही उन महाराजा प्रतापसिंह को सिंहासन प
बैठाइये।

हक बड़े भाई का ये हक उन्हीं को दीजिये।
धर्म पर आजाइये अनर्थ न इतना कीजिये॥

जग—(स्वयम् भयभीत होकर) हैं ये क्या, अब क्या करूं औ
क्या बनाऊं, क्या चन्द्रावत के भय से भयभीत हो जाऊं
(कुछ सोच कर) कदापि नहीं (प्रगट) ये क्या महारा
जगमल को राजकुमार कह कर पुकारते हो, ये कदापि न
हो सकता क्यों नाहक सर मारते हो।

चन्द्रा—नहीं तुम राना नहीं हो सकते।

जग०—क्यों क्या मैंने यह राज्य पिता जी से नहीं पाया।

चन्द्रा०—पाया है परन्तु ये कार्य राना उदयसिंह ने कुछ ठीक नहीं किया इसलिए कहना मान जाओ, बात मत बढ़ाओ इस राज सिंहासन से नीचे उतर आइये।

जग०—नहीं मुझे तुम्हारी बात नहीं सुहाती।

चन्द्रा०—ये बात है।

जग०—हां हां ये बात है।

चन्द्र०—अच्छा ये बात है तो ये लो (सरदार चन्द्रावत का जगमल सिंह का हाथ खींच कर गद्दी से उतार कर महाराजा प्रतापसिंह को राज गद्दी पर बैठाना और राजमुकुट पहनाना (बोलो मेवाड़ अधिपति महाराणा प्रताप सिंह की जय)

सब—जय! हमारे महाराणा प्रतापसिंह की जय!

(यह सुनकर जगमल का भयभीत होना और स्वयं भी जय बोलना)

चन्द्रावत—महाराणा आज समस्त मेवाड़ की जन्मभूमि आप जैसे वीर की ओर कातर दृष्टी से तक रही है, दुष्ट यवनों के अत्याचारों से दुखी होकर सिसक रही है। देखो यवनों ने यहां बड़े २ उतपात मचाये हैं, मन्दिर लूटे और हजारों माई के लाल बेगुनाह मार कर मिट्टी में मिलाये हैं, उठो और इन दुष्ट यवनों से इस मेवाड़ की पवित्र भूमि को पद दलित होने से बचाइये, बचाइये बचाइये इस क्षत्रिय जाति की मान मर्यादा को बचाइये। आज आप के इस काम में हाथ बटाने को मेवाड़ का बच्चा २ तैयार है।

इस अभागे देश को लीजे बचा अपमान से ।
जिन्दगी क्या जिन्दगी जबतक न जीवें शान से ॥

प्रताप—सत्य है आप लोगोंका विचार सत्य है, सरदार चन्द्रावत तुम न घबराओ। वक्त आएगा तो देखा जायेगा, यदि मेवाड़ के वीर राजपूत अपनी जन्मभूमि मेवाड़ की रक्षा को तत्पर हैं, तो प्रतापसिंह कब बाहर हैं, हाथ उठाओ और व्रत करो कि हम अपनी जन्मभूमि के लिये अपने प्राण लड़ा देंगे जैसे भी होगा इस देश की लाज बचा देंगे और जब तक दुष्ट यवनों के रक्त से हम माता की प्यास न बुझायेंगे, कदापि आराम व सुख न पायेंगे ।

धर्म है अपना यही इसी देश की रक्षा करें।
देश परही हम मिटेंगे जी के ही हम क्या करें ॥

राजपूत नं० १—हां अन्नदाता जिस भूमि पर हमने जन्म पाया है, जिस देश का जल पिया और अन्न खाया है, उस देश पर अपनी जान लड़ा देंगे ।

सर कटायें देश पर इस बार हंसते खेलते ।
वार दुशमन के सहेंगे मार हंसते खेलते ॥

नं० २—हां धर्मावतार जबतक हमारे हाथमें तलवार है, इस देश की रक्षा करने के लिए जी और जान से तैयार हैं ।

दुष्ट यवनों के लहू से हम बुझायें आग से ।
देश की रक्षा करेंगे वीरता के फाग से ॥

नं० ३—महाराज जब तक हम दुष्ट यवनों के उतपात को न मिटा देंगे तब तक चैन न पायेंगे ।

रक्त यवनों का बहायेंगे देखते ही देखते ।
काल सम गर्जें दिखायें देखते ही देखते ॥

नं० ४—जब तक हमारे हाथ में कृपान है जब तब हमारे जान में जान है अपने व्रत को पूर्ण निभायेंगे, या तो मर जायेंगे और या अपने राष्ट्र को नित्य प्रति की हानि से बचायेंगे।

प्रताप—शाबाश मेरे वीर सरदारो बेशर्मी के जीने से आजादी की मौत मरना अच्छा है, जब हमारा यह व्रत है तो वो ईश्वर हमारे इस व्रत को निभायेगा, देश की स्वाधीनता कायम रखने के लिए लोहा हमारे हाथ है, तो उस परम पिता परमात्मा की शक्ति भी हमारे साथ है।

हिम्मत यदि करेंगे तो संसार को हिलादेंगे।
हर हर महादेव से हम दुनिया को गुंजा देंगे॥

द्वारपाल—(प्रवेश करते हुए) महाराणा की जय हो, दुशमन को भय हो द्वार पर शीतल भाट आया है यदि आज्ञा पाऊं तो उसे इस सिंह सभा में ले आऊँ।

प्रताप—हां हां आने दो।

(द्वारपाल का जाना और शीतल भाट का आना)

शीतल—अन्नदाता सेवक का प्रणाम स्वीकार हो।

प्रताप—प्रणाम शीतल भट आनन्द में हो।

शीतल—महाराणा मैं आपके हृदय के भाव और दयालुता और वीरता रण धीरता व गम्भीरता देख कर ही कविता सुनाने आया हूँ, और येही इच्छा अपने साथ लाया हूँ यदि आज्ञा पाऊं तो कुछ कह सुनाऊं।

प्रताप—यद्यपि ये समय देश जाति और गौवों की रक्षा करने का है इस जन्म भूमि का कष्ट हरने का है तथापि मैं तुम्हारे उत्साह को मिट्टी में नहीं मिलाना चाहता, आगे

आओ और सुनाओ।

शीतल—जो आज्ञा।

कविता

पूनों के चन्द का ज्यों जग में प्रकाश होये,
त्यों ही तुम्हारी ज्योति जग में सवाई है।
वीरता गम्भीरता रणधीरता को देख देख,
शत्रन में हिय के यह वीरता समाई है॥
धर्म को मैदान ज्ञान शान से कृपान तान,
वीर व्रत धार ये तलवार जो उठाई है।
लाल लाल नैन कर शत्रुन बेचैन कर,
हिन्दुत्व राखने को जाति जगाई है॥

खंडराव—वाहवाह शीतल जी आपकी कविता क्या है मानो सोने में सुहागा अथवा कीमती रत्न है।

प्रताप—मन्त्री जी इन्हें सहस्त्र मुहरें देकर इनका मान बढ़ाओ।

शीतल—ठहर जाइये धर्म अवतार मुझे धन की आवश्यकता नहीं यदि देना है तो मुझे अपना सरोपा पहिनाइये।

प्रताप—पुत्र अमरसिंह जाओ, एक सरोपा इन्हें देकर इनकी कामना पूरी करो।

(अमरसिंह व शीतल भाट का प्रस्थान)

प्रताप—वीरो मैं आज अपनी जन्मभूमि मेवाड़ की दुर्दशा अब इन नेत्रों से नहीं देख सकता, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक मैं इस हिन्दू जाति व इस देश की रक्षा नहीं कर लूंगा तब तक पहाड़ों में बिना बिस्तर के सोऊंगा,

और स्वर्ण के बर्तनों के अलावा लोहे के बर्तनों में एक ही समय भोजन खाऊंगा, न हजामत ही कराऊँगा, न नाखून कटाऊंगा और जो प्रथा नौबत नगारे बजवाने की है मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर के ही यह सब काम करूँगा।

दिन में तारे उगें अनल पूरब में जाये।
पर्वत राई होय गङ्ग उल्टी बह जाये॥
सूखं समुद्र जाय इन्द्र अग्नी बर्साये।
ये सब हों उत्पात वचन नहीं मिथ्या जायें॥

सब राजपूत--(हाथ उठा एक जबान से) तो हम भी भगवान को साक्षी कर भुजा उठाकर प्रतिज्ञा करते हैं कि हम मरने को मर जायेंगे, परन्तु आपकी प्रतिज्ञा के साथ हम भी प्रतिज्ञा को निभायेंगे, जब तक चित्तौड़ की स्वाधीनता प्राप्त नहीं कर पायेंगे, तब तक बनवासियों की भांति जीवन बितायेंगे, पृथ्वी पर सोयेंगे और पत्तलों पर खायेंगे।

प्रताप--शाबाश वीरो सच्चे वीरों का यही धर्म है।

कृष्ण--क्षत्रिय कुल दिवाकर जो मेरी अभिलाषा सदैव रह २ जाती थी आज वो पूर्ण होगई, तुम सा नेता पाकर ये हिन्दू जाति धन्य हो गई, प्रभु इस सिसोदिया वंश की मान मर्यादा को सूर्य के समान चमकाओ।

प्रताप--देश भक्तो, राजस्थान के चमकते हुए सितारो, आज तुम्हारा ये कठिन व्रत देखकर मेरा उत्साह चौगुना हो गया, उठो आज से पर्वतों को ही अपना दुर्ग जानो और प्रत्येक बन को संग्राम भूमि मानो और इन पर्वतों की

कन्दराओं को राजमहल जान कर विश्राम करो, औ
पर्वतों की हरेक चट्टान को पलंग समझ कर आराम करो।
हटा दो अब परे एकदम तुम बिस्तर गुदेलों को।
लगालो अब सिरहाने प्रेमसे अब मिट्टीके ढेरों को॥

चन्द्रावत कौमी नारा।

सब—हर हर महादेव।

(आगे आगे महाराणा प्रताप और पीछे सबका तलवार सूत कर जाना)

अङ्क पहला — दृश्य तीसर

(स्थान—कुम्भल मेर के दुर्ग का अग्र भाग)
महाराण प्रताप सिंह का विचार निमग्न प्रवेश)

प्रताप—(स्वयम्) शोक महा शोक इस परम पावन भूमि को दु
यवनों ने प्रवेश कर अपवित्र कर दिया, तभी ये उपजाउ
भूमि असर नजर आ रही है, तभी से इस स्थान प
अशान्ति ही अशान्ति दीखती है, जब मैं उसकी दश
पर दृष्टि उठाता हूँ तो दुष्ट यवनों को आराम कर
हुए पाता हूँ जहां नित्य प्रति गौवों की पूजा होती थ
वहां अब ये दुष्ट उनका रक्त बहाते हैं, जो चित्तौड़ग
राजपूतों के रहने का स्थान था वहां यह दुष्ट यव
ही देखने में आते हैं, अब क्या रावल के महाराण
की आत्मा यह देख कर स्वर्ग में दुख न पाती होगी। ह
जिस चित्तौड़ की रक्षा में उन्होंने अपने प्राण लड़ा
आज वोही जन्म भूमि इस प्रकार पद दलित की जाय
शर्म, शर्म यह हमारे लिए बड़े शर्म की बात है। ह

दादा संग्रामसिंह तुमने अपने जीते जी अपना कर्तव्य निभाया, तुमने अपना कर्तव्य पालन कर कीर्ति व यश बढ़ाया, मुझे वो समय प्राप्त आपके साथ २ हो जाता तो कदापि इस पवित्र स्थान का अपमान न होने पाता, परन्तु क्या डर है अभी मेरी भुजाओं में दम है मुझ में साहस है, क्षत्रियों का रक्त है, शत्रुओं का मान मर्दन करने को मेरे हाथ में तलवार है। अकबर! अकबर तेरी नीचता भी इस तलवार से खाक में मिला दूंगा, तेरा गर्व और तेरा गुमान करना एक क्षण में भुला दूंगा।

बादशाहत का तेरे दिल में बहुत अभिमान है।
जानता तू हिन्दुओं की मेरे वश में जान है॥
तेरी इस पाप आत्मा को दण्ड मैं दूंगा जरूर।
खाक में एक दिन मिला दूंगा, ये सब तेरा गरूर॥

(एक राजपूत सैनिक का प्रवेश)

सैनिक—महाराज!

प्रताप—क्यों क्या है हंसराज?

सैनिक—महाराजा मानसिंह के आने का समाचार पाया है, इस लिए सेवक सेवा में आया है कि उन के साथ क्या व्योहार किया जाए।

प्रताप—(स्वयम) समझा वो कलङ्की अतिथि बन कर आता है, शायद वो अतिथि सतकार मुझ से कराना चाहता है, तो क्या उसका अतिथि सत्कार करूं। (कुछ सोच कर) नहीं नहीं उस नर पिशाच मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र के वंश को कलंकित करने वाले नारकीय कीड़े का मुख देखना भी पाप है, परन्तु घर आये को अनादर

कर लौटना भी महा संताप है (कुछ सोचकर) अच्छा
भी ऐसी तरकीब चलाता हूं कि सांप भी मर जाए
लाठी भी बचाता हूँ (सैनिक से) अच्छा तुम जाओ
कुमर अमरसिंह को बुला लाओ, क्योंकि वह हुशियार
आप ही इस काम में चातुरी दिखायगा ।

सैनिक—जो आज्ञा । (जाना और अमरसिंह को साथ लाना)

अमर०—पिता जी मैं सेवा में हाजिर हूं । आज्ञा सुनाइये,
सेवा मेरे लायक है सो बताइये ।

प्रताप—पुत्रवर नीच यवनों के साथ बेटी व्यवहार करने वा
नीच आत्मा क्षत्रिय कुल कलङ्क मानसिंह आया है,
के सत्कार को उदयसागर पर जाओ और चतुराई
अतिथि सत्कार कर उसे यहाँ से टरकाओ, परन्तु अति
सत्कार में कोई कसर न रहे ।

अमर—जो आज्ञा पिता जी ऐसा ही किया जाएगा ।

(प्रस्थान)

अंक पहला — दृश्य चौथ

(स्थान उदयसागर)

(कृष्णसिंह भामाशाह व अमरसिंह आदि का मानसिंह
के साथ प्रवेश)

मान०—(स्वयं) मालूम होता है कि सफलता मेरे सामने म
झुकाये तैयार है, जो इस प्रकार मेरा आदर
अतिथि सत्कार है, जो प्रताप मेरी इस प्रकार
भगत करता है ज्ञात होता है कि ये मेरी वीरता से

है, पहाड़ों में ठोकरें खाने से प्रताप की जो बुद्धि है वह अब ठिकाने आई है, जो इस कदर खातिरदारी की समाई है, (प्रगट) कुमार अमरसिंह मालूम होता है कि मुझ पर महाराणा ने बहुत ही अनुग्रह किया है जो अतिथि सतकार का यह व्यवहार किया है (इत उत देख कर) परन्तु ये क्या बात है, आप तो सब साथ हैं, परन्तु महाराणा जी अभी तक नहीं आए भला उनके बिना ये अतिथि कैसे भोजन पावे।

अमर०—हां हां जब तक आप भोजन पायेंगे, तब तक पिताजी भी आजायेंगे।

मानसिंह—(आसन पर बैठ कर) नहीं नहीं, नहीं जब तक महा-राणा नहीं आते, तब तक हम भी भोजन नहीं पाते। अमरसिंह आप जायें, और शीघ्र महाराणा जी को ले आये जब वो आजायेंगे, तो हम और वह एक ही थाल में भोजन एक ही साथ खायेंगे, क्योंकि उनके बिना आए अतिथि सतकार नियम के विरुद्ध होता है।

अमर०—महाराज यदि वो नहीं आए तो मैं उपस्थित हूँ, आप व्यर्थ देर न लगाइये, भोजन पाइये, मुझे ही उनकी जगह जान जाइये।

मान०—भला तुम और राणा जी एक कैसे हो सकते हो, जब तक संसार में राणा जी विराजमान हैं, तब तक आप बालक हैं, और नादान हैं, महाराणा जी का ये व्यवहार दुरव्यवहार है। अतिथि सतकार के लिए स्वयम न आकर बच्चों को भेज कर अनादर करना कहां का सतकार है, इसलिए जाओ मैं यहां बैठा हूं महाराणा जी को बुलालो

अमर०—यदि आप नहीं मानते तो मैं जाता हूँ, आप की आज्ञा बजाता हूँ। (जाना और लौट आना)

मान०—(अमरसिंह को अकेले आते देख कर) हैं अमरसिंह आ गया परन्तु महाराणा जी नहीं। (प्रगट) क्यों अमरसिंह महाराणा जी नहीं आए।

अमर०—महाराज वो सिर में दर्द बताते हैं, इसलिए वो नहीं आना चाहते हैं, क्योंकि ऐसी अवस्था में वह चलने फिरने में दुख पाते हैं।

मान०—अमरसिंह मैं इस दर्द का कारण खूब जानता हूँ, मैं इतना नन्हा नादान नहीं हूँ खूब पहचानता हूँ तुम्हें एक बार उनके पास फिर जाना चाहिये और महाराणा जी को समझाना चाहिये, यदि वो नहीं आते हैं, तो हम बिना भोजन किये ही चले जाते हैं।

कृष्ण०—यदि आप साफ ही सुनना चाहते हैं, तो सुनो महाराणा प्रतापसिंह ऐसे नीच मनुष्य के साथ भोजन नहीं खाते हैं, जिसने यवनों को अपनी इज्जत देकर मान मर्यादा सब मिट्टी में मिला दी हो, भोजन खाना तो दूर रहा वह ऐसे कुल कलंक की सूरत भी नहीं देखना चाहते हैं।

मान०—ओहो इतना अभिमान, घर आए अतिथि का इस कदर अपमान, यदि रखो मेरा नाम मानसिंह है। मेरा नाम सुन कर बड़े २ वीर भयभीत हो जाते हैं, मैं अन्न का तिरस्कार नहीं करता हूं, (चावल के दाने पाग में रख कर) बल्कि इस अन्न देवता को सिर धरता हूं परन्तु स्मरण

रहे जब तक इस अपमान का बदला नहीं चुकाऊंगा, तब तक कदापि चैन नहीं पाऊंगा।

मैं चुका लूंगा ये बदला एक दिन अपमान का।
सिर बनेगा अब निशाना अब इस कृपान का॥
देखना मेवाड़ यह शमशान का स्थान हो।
बस्तियाँ इस देश की एक दिन अवश्य वीरान हों॥

(चलना चाहते हैं सामने से महाराणा प्रतापसिंह आते हैं)

प्रताप—ये क्या राजा मानसिंह ! आप इतने गर्मा गये, शायद ज्ञात होता है अपनी नीचता पर शर्मा गए। भला आप के अतिथि सत्कार में किस बात की कमी है जो इस प्रकार अप्रसन्न होकर जाते हो, क्या कुमार अमरसिंह से कोई भूल हुई है जो बार बार मुझे बुलाते हो। भला मैं ऐसे नीच नार्की कीड़े के साथ भोजन कैसे खाऊं, जिस ने अपनी बहू-बेटियां यवनों को सौंप कर क्षत्री कुल को कलंक लगाया हो, मैं उसके साथ भोजन खा कर स्वयम भी कलंकित हो जाऊं, याद रख मानसिंह।

जिस ने निज सुख के लिए खोया हो गौरव मान को।
बेटी यवनों को दई और बट्टा लगाया शान को॥
साथ खाना तो दूर है दर्शन तक न पाऊं उसके मैं।
सत्य सौगन्ध खा कहूं, धोखा न हरगिज खाऊं मैं॥

मान०—महाराण जी ऐसे ख्याल करना आपकी भूल है, यवनों से यह व्यवहार मैंने जो किया है इस में भेद है, इसमें राजपूतों की मान मर्यादा रखने को ऐसा किया है आपको व्यर्थ खेद है, यदि इस अकबर से बेटी व्योहार

न करते, तो राजपूत बिन आई मरते, हमने अकबर
बेटी देकर एक शर्त ठहराई है।

प्रताप—वो क्या ?

मान०—वह ये जो संतान उसके गर्भ से हो जायगी, सोही
देहली की बादशाहत पायेगी, इस तरह समस्त भारत
बागडोर राजपूतों के हाथ में आ जायगी।

प्रताप ठीक जो आपके मन में आए सो कीजिए, परन्तु
साथ में भोजन करने का विचार बेकार हैं, एक सच्चा
राजपूत ऐसे नीच के हाथ का पानी पीने से
लाचार है।

मान०—अच्छा प्रतापसिंह इन बातों का उत्तर अपनी तल
से दूंगा, इस अपमान का बदला मैदान जंग में लूंगा।

प्रताप—वक्त आएगा, तो देखा जाएगा।

(मानसिंह का खिसियाना होकर जाना)

राज० नं० १—राजा मानसिंह एक बात मेरी भी सुन जा
जब मैदान जंग में युद्ध करने आओ तो अपने बहने
अकबर को भी साथ लेते आना।

प्रताप—देखो मेरे बहादुर शेरो, मेरे जां निसार शेरो, जि
स्थान पर ये कुत्ता बैठा था उस स्थान को गंगाज
से धो कर पवित्र करो, और जिन बर्तनों को इस
कलंकी ने स्पर्श किया है उन को फेंक दो। मेरी नज़रों
दूर करो, और जाओ तुम भी स्नान कर यज्ञोपवी
बदलना।

प्रताप—मेरे बहादुर सरदारो ! सावधान हो जाओ, ये कुलक

दिल्ली पहुंच कर अकबर को भड़काएगा, बड़े बड़े रंग चढ़ायेगा, बहुत प्रचण्ड आग लगायेगा अवश्य अकबर से मेवाड़ पर आक्रमण करायेगा, ये नीच कभी अपनी नीचता से बाज़ नहीं आएगा, इसलिए उठो और तलवार सम्भाल लो और ये ही समय है कि खूब दिल के अरमान निकालो।

वीर हो रण धीर अब सूंत लो तलवार तुम।
वीर होली खेलने को अब रहो तैयार तुम॥
प्राण चाहे छोड़ देना पर न छोड़ो आन को।
मर के भी ऊँचा उठा दो राजपूती शान को॥

सब—जायेंगे छाती के सनमुख बाण हम,
वीर व्रत पालन करें हंस हंस के देंगे प्राण हम॥

(सबका प्रस्थान)

अङ्क पहला — दृश्य पाँचवां

स्थान—अकबर का शाही दरबार

(सब दरबारी बा अदब बैठे हैं और अकबर देहली की राजगद्दी पर बैठे हैं और नृत्यकायें गाती नाचती आती हैं)

गायन

कायम दायम दुनियां में ये रहे तख्त और ताज।
नाचो आली दे दे ताली पी पी प्याली आज॥
आओ सखी री मिल २ हम तुम करें दुआयें खैर।

शाद रहें जग में आली जा करें जहां की सैर ॥
सारे जग में करें हकूमत हो दुनियां पर राज ॥
दुशमन हो पायमाल शाहकी दुआ यही दिन रैन ।
झुक जाये कुल जहां सभी यह होकर के बेचैन ॥
हूर और गिलमा रहें हुकुम में रहें सभी सुखसाज ।
कायम दायम दुनियां में ये रहे तख्त और ताज ॥

अकबर—(स्वयं) आहा खुशी, खुशी क्यों न हो जिस काम में हजारों मुसलमानों की जान जाती, जिस काम में हजारों औरतें रांड बेवा हो जातीं, आज वो काम अकेला मानसिंह कर लाया। मेरी हिकमत मेरी हुशियारी भी क्या है हिन्दुओं का नाश एक बेवकूफ हिन्दू से कराया। यदि मैं मानसिंह को अपनी हुशियारी से दक्खिन में न भेज पाता तो यह दक्खिन कैसे फतह हो जाता। शुक्र है जुल जुलाल जो अपने बन्दों पर रहम फरमाया, जो काम उम्र मुहाल था वो भी एक लहमे में बनाया काम भी बनाया और अपनी रहमत से अपनी अस्मत को बचाया (प्रगट) अय मेरे बहादुर सरदारो, अय तख्तो ताज के जांनिसारो, जब बहादुर मानसिंह हजूरे आली में आए तो उनका मर्तबा और उनकी मुबारकी का तौक बाअदब दिया जाए।

सब—बजा है आलीजाह। ऐसा ही किया जाएगा।

(राजा मानसिंह का आना सब का खड़े होकर ताजीम बजाना)

अकबर—राजा साहब ये दरबार आपको दक्खिन खूंट की फतह पर मुबारिक बाद देता है, वाकयी दक्खिन पर फतह पाना

आपका ही काम था।

(सबका मुबारिकी देना मानसिंह का मसनद पर बैठ जाना, सबका भी बैठ जाना नृत्यकाओं का नाचते हुए आना)

गायन

फतह दक्खिन में जा पाना मुबारिक हो मुबारिक हो।
खुशी के वक्त का आना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
जमीं से आसमां तक धूम छाई है मसर्रत की।
यही हैं फैल मर्दा मुबारिक हो मुबारिक हो॥
चमन में हर शजर हर वर्ग कहता है मुबारिक हो।
कमर का तुम से शर्माना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
खुदाया और भी तुम फतह हासिल हों दुनियां में।
दिले 'बेचैन' यह माना मबारिक हो मुबारिक हो॥

(नृत्यकाओं का प्रस्थान)

अकबर---क्यों राजा साहब इतनी फतह हो जाने पर दरबार की मसर्रत अरूज पाती है, लेकिन ऐसी खुशबखती में भी आपकी तबियत कुछ रंजीदा नजर आती है, बताओ, बताओ बहादुर मानसिंह इस वक्त आपको क्या मलाल है। कहो वो कौनसी बात है जिसका तुम्हें इस कदर खयाल है। बताओ मानसिंह क्यों इस तरह परेशान हो, आखिर ऐसी क्या बात है, जिसके लिए इतने हैरान हो। अगर किसी ने आंख उठाई हो तो आँख निकलवा दूं, अगर किसी ने हाथ उठाया हो तो हाथ तुड़वादूं और अगर किसी मगरूर ने सर उठाया हो तो सर कटवा दूं। अगर किसी जबांदराज ने जबां को चलाया हो तो जबां निकलवा दूं। कौन मगरूर है जो

तुम्हारे मुंह आता है, कौन बद किस्मत है जो मौत के मुंह में जाना चाहता है।

किसकी है ये मजाल जो तुम को बुरा कहे।
तुमको बुरा कहे तो क्या वो ज़िन्दा ही रहे॥

मान०—बन्दाये परवर कौन है जो मेरे सामने जबान चलाव हाँ एक खटकता खार प्रताप ही है जो आप का खौफ नहीं खाता है।

पृथ्वी०—(स्वयम) सत्य है सिंह कभी भय नहीं खाया करता।

अकबर—ओ हो प्रताप इतना मगरूर, एक मामूली आदमी के इतना गरूर, किसी का कहना सच है।

पर आ जाते हैं चींटी के जब मौत का आ जाता पैगाम।
जिस आदमी पर गर्दिश आती तो खुद करता है खोटे काम॥

मान०—आलीजाह मैंने जब शोलापुर विजय कर देहली को रुख घुमाया तो उदयपुर रास्ते में आया, वहां प्रतापसिंह ने मुझे मेहमान जान कर ठहराया, परन्तु जब भोजन करने का वक्त आया, तो उसने अपने लड़के अमरसिंह को पठा दिया। मैंने जब उसको बुलाया, तो उसने मेरा बड़ा अपमान किया, उसने कहा कि मैं ऐसे नीच प्रकृति के आदमी के साथ भोजन नहीं खाऊंगा, जिस ने अपने कुल की शान को मिट्टी में मिला दिया, अथवा जिस ने अपनी बहन को यवनों के ब्याह दिया।

अकबर—अच्छा इतना गरूर।

मान०—जी हजूर।

अकबर—अच्छा मैं इसका ये गरूर मिट्टी में मिलाऊंगा, राज़ी से या नाराज़ी से उस की भी बेटी इसी ख़ानदान में लाऊंगा।

मान०—आलीजाह ! मुझे अफसोस है कि आप के होते हुए मेरा यह अपमान किया जाए और फिर भी वह जिन्दा रह जाए। याद रखिये ये मेरा अपमान नहीं आपका अपमान है, आली जाह ! वो अपने आप को प्रताप समझता है। जब तक उसको मिट्टी में न मिला दिया जाएगा, जब तक उस । बदला न लिया जाएगा, तब तक मानसिंह कदापि चैन न पायेगा।

अकबर—बजा है राजा साहब ! न घबराओ, ऐसा ही किया जाएगा। सलीम बेटा सलीम जाओ, अपनी सारी फौज सजालो, व शक्तिसिंह व सागरसिंह और महावत खां शाहजादे सलीम की इमदाद के लिए तुम भी जाओ, अपनी अपनी फौज सजा कर साथ में ले जाओ, उस मगरूर राजपूत को मार कर ठिकाने लगाओ। जाओ मेवाड़ की ईंट से ईंट बजाना, उस प्रताप का सर उड़ाना या जिन्दा पकड़ कर हमारे हुजूर में लाना। मगर याद रखो इतना काम किये बगैर यहां आकर मुंह मत दिखाना।

अय जवां मर्दों उठो और हाथ में तलवार लो।
दो मज़ा मगरूर को और तेग जौहर दार लो॥
फूंक दो मेवाड़ को छोड़ो न तुम बिल्कुल निशां।
करके कतले आम मारो उसके कुल परिवार को॥

सब—जो इर्शाद आलीजाह। (आगे सलीम पीछे सबका जाना)

अंक पहला **दृश्य छठा**

स्थान--कुम्भल मेर का दुर्ग

(महाराणा प्रतापसिंह और रामसिंह का प्रवेश)

प्रताप---श्रीयुत रामसिंह जी ! अपने यहां आकर मुझे सदैव के लिए ऋणि बना दिया। मैं इसका आभारी हूं।

रामसिंह---नहीं नहीं महाराणा जी, जिस जन्म भूमि की रक्षा के लिए आपने सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, तो मेरा भी तो कुछ धर्म है। इस में आप पर क्या एहसान किया।

प्रताप---धन्य है। सच्चे वीर से यही आशा की जाती है, मातृ-भूमि की रक्षा करना सच्चे वीरों की थाती है। धन्य आपकी श्रद्धा, धन्य हैं आप के माता पिता, उठो और तलवार उठाओ, वीर रामसिंह जी, मातृ भूमि की वेदी पर हंसते हुए स्वयं बलिदान हो जाओ।

राम०---राणा जी आप न घबराइये, जो कुछ होता है देखते जाइये।

हाथ मैं दिखलाऊँगा तुम देखना मैदान में।
गर जिऊंगा तो जिऊंगा वीरता की शान में॥
देश हित पै प्राण भी जाते तो कुछ चिन्ता नहीं।
साथ में अकबरके यम आयें तो कुछ चिंता नहीं॥

प्रताप---धन्य है ग्वालियर धीश वास्तव में देशभक्ति का परिचय देकर मेरे उत्साह को बढ़ा दिया, यदि देखा जाए तो आपने क्षत्रियों की यश कीर्ति को सूर्य के समान चमका दिया।

कृष्णसिंह—महाराणा जी सेवक का प्रणाम लीजिये, जो सेवा मेरे योग्य हो सो बता दीजिये।

प्रताप—कृष्णसिंह प्रभु आपका कल्याण करे और इस मातृभूमि की रक्षा सेवा आपको प्रदान करे, श्रीयुत सालू बरांधीश कृष्णसिंह जी, जिस लिए आप लोगों को यहां बुलाया है, अब वो समय निकट ही आया है।

शेष जीवन को लगादो देश के इस काम में।
दुष्ट यवनों को हनों बढ़ बढ़के अब संग्राम में॥

कृष्ण—राणा जी यह अवसर हमने बड़े भाग्य से पाया।
जब झुकें मैदान में एक बार हंसते खेलते।
देखना कैसे चले तलवार हंसते खेलते॥
लाश पर लाशें चुनें अस्वार हंसते खेलते।
जब करें मिलजुल के हल्ला अपना सीना खोलकर।
भाग जायें यवन सब तोबा तिल्ला बोल कर॥

प्रताप—हां हां कृष्णसिंह वीर! मैं तुम्हारी वीरता को जानता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है तुम्हें पूरा वीर मानता हूँ।

(देवीसिंह का अपने पुत्र चन्दनसिंह सहित प्रवेश)

देवी०—महाराणा सेवक प्रणाम बजा लाता है।

प्रताप—ओ हो, भीमगढ़ नरेश! वास्तव में तुम साक्षात् भीम के ही अवतार हो, कुशल से तो हो?

देवी०—आपकी कृपा व ईश्वर की दया से।

प्रताप—(चन्दनसिंह को देखकर) धन्य है देवीसिंह जी आप तो आये, और साथ राजकुमार को भी ले आये।

चन्दन—महाराणा जी प्रणाम। हम दोनों पिता पुत्र आपके

दर्शन करने चले आए, अहो भाग्य जो आप के दर्शन पाए।

प्रताप—बेटा चिरंजीव रहो। वास्तव में सच्चे वीरों का यही काम है, बेटा यदि सत्य पूछते हो तो क्षत्रीपन का यही धर्म है, परन्तु पुत्र अभी तुम्हारी बाल अवस्था है इसलिये तुम समर भूमि में मत जाना, अभी तुम पीना खाना मौज उड़ाना।

चन्दन०—क्या कहा, मैं युद्ध में न जाऊं, क्या ऐसा करके क्षत्री पन को दाग लगाऊं ? नहीं मैं अवश्य जाऊंगा, अवश्य ही अपना क्षात्र धर्म निभाऊंगा।

माना मैंने मैं अभी नादान हूं और बाल हूं।
दुष्ट यवनों के लिए यमराज हूँ और काल हूं॥
बालपन जो नष्ट करदे काम है चण्डाल का।
देखना जौहर समर में क्षत्रियों के लाल का॥

प्रताप—बेटा कहना मानो जिद मत ठानो।

चन्दन—तो क्या छोटे से मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने रावण का अभिमान नहीं ढाया, क्या छोटे से बालक अभिमन्यु ने समस्त कौरव दल का मान नहीं घटाया। बेशक मैं छोटा हूं, परन्तु शत्रुओं का रक्त पान करने को बहुत मोटा हूँ।

प्रताप—अच्छा यदि इसलिए इच्छा है तो चलने दिया जाये। यदि इसकी इच्छा है तो दुष्ट यवनों को दलने दिया जाये।

प्रताप—अच्छा वीर वर ! मारो मरो परन्तु इस जन्म भूमि की रक्षा करो।

(सेनापती का प्रवेश)

सेना०---सर्व सज्जन मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिये।

प्रताप---आहा सेनापती जी ! आप आये बताओ क्या कोई नया समाचार लाए।

सेना०---हां महाराज ! शहज़ादा सलीम अपनी अध्यक्षता में अपार टिड्डी दल लिए मेवाड़ की ओर बढ़ा चला आता है।

प्रताप---बस तो सेनापती जी आप भी जाइये, समस्त वीरों को मेरा आदेश सुनाइये, समस्त सेना को सजाइये; और रण भेरी बजाइये।

हो जाओ तैयार वीर वर शस्त्र उठाओ।
मारो मुगल पठान लहू की नदी बहाओ॥
धर्म की रक्षा करो न रण में पीठ दिखाओ।
दुश्मन का सब गर्व धूर में आज मिलाओ॥
क्षत्रि धर्म की लाज प्राण भी देय बचाओ।
(तलवार खींच कर) मारो मरो न हटो लाश पर लाश बिछाओ।
ये प्यासी तलवार है इसकी प्यास बुझाओ॥

सेना०--जो आज्ञा (प्रस्थान)

प्रताप---वीर योधाओ उठो और अपनी सेना सजालो, आह गृह में ही गङ्गा आई है प्रेम से मल मल कर नहालो।

आन न जाने पाए प्राण चाहे बेशक जाओ।
मण्डमुण्ड से चाहे सभी ब्रह्माण्ड को हिलाओ॥
ये सौभाग्य का दिवस नाम जग में कर जाओ।
खण्ड खण्ड कर देओ रूप प्रचण्ड बनाओ॥

सब—जो आज्ञा महाराणा।

राम०—बरण चण्डी की शपथ आज हम सत्य ही खायें।

चौपट्टा कर दें शस्त्र जिस ओर उठावें॥

(कृपान सूंत कर) हम जीवेंगे शान से और हम मरेंगे शान से।

काट भट चौपट करें मैदान इस कृपान से॥

(सबका तलवार सूंत कर आवेश में प्रवेश)

अंक पहला — दृश्य सातवाँ

स्थान अगला महल

(पद्मावती का सेविकाओं के सहित गौरी पूजन करते दृष्टि आना)

गायन

गौरी पूजन करिये निशिदिन।
माता संकट हरिये पल छिन॥ गौरी०॥
शिव अर्धाङ्गनि खल दल मलनी।
जय जय जगदम्बा जय जय जननी।
कौन सौ संकट मां तुम बिन॥ गौरी०॥
जय जय जगदम्बा भवानी।
मन "बेचैन ने कीर्ति बखानी॥
तन मन धन सब तुम्हारे अर्पित॥ गौरी०॥

पद्मा०—आदि भवानी वेद बखानी जगदम्बे! इस महायुद्ध के वीरों ने जो प्रण ठाना है, वह केवल आपने ही निभाना है, हे देवी क्षत्रियों की लाज बचाओ, माता मलेच्छों के

अत्याचारों को मिटाओ। त्राहिमाम् त्राहिमाम्, माता त्राहिमाम्।

(प्रतापसिंह का प्रवेश, देवी पूजा करना)

प्रताप०—देखो माता ! जो मैंने कठिन व्रत धारा है, उसे तुम्ही निभाओगी, सेवक को तो केवल आपका ही सहारा है, देखो माता हमारी जन्म भूमि कैसे संकट में है। इसकी लाज केवल तुम्हीं तो बचाओगी, माता कृपा कर मेरे प्रण को निभादो, विधर्मी इस मेवाड़ की पवित्र भूमि को पद दलित करने जा रहे हैं उन पर विजय करादो। बचादो, माता एक बार इस मेवाड़ के क्षत्रियों की लाज बचादो। त्राहिमाम् माता त्राहिमाम्।

(साष्टांग दंडवत करके पद्मा की ओर)

प्रताप—प्रिये पद्मा !

पद्मा—समझी स्वामी ! तुम संग्राम में जाते हो, इसलिए मुझ से बिदा चाहते हो। जाओ स्वामी जाओ, जगदम्बा तुम्हारी रक्षा करे, इस क्षात्र धर्म की बलि वेदी पर आनन्द से रण भेरी बजाओ। जब तुम संग्राम में विजय करके आओगे, तो मेरे आराध्य देवता दुर्ग के द्वार पर ही खड़ी अपनी प्रिया पद्मा को पाओगे। जब तुम्हारे विजय होकर आने की खबर पाऊंगी तो वहां आपका स्वागत कर जयमाला पहनाऊंगी। यदि आप संग्राम में वीर गति को प्राप्त हुए तो मैं भी उसी समय सती होकर स्वर्ग में आपके दर्शन पाऊंगी।

प्रताप—धन्य है पद्मा ! तुम्हारे जैसी स्त्री रत्न के सहारे ये पृथ्वी व आकाश हैं।

(नेपथ्य से महाराणा प्रतापसिंह की जय की आवाज)

प्रताप--अच्छा प्रिये पद्मा, सेना का हर एक वीर वीरता में चूर हो रहा है। मैं जाता हूं समय भरपूर हो रहा है।

पद्मा--हां स्वामी जाइये, जगदम्बा माता की कृपा से अधर्मी अन्याइयों पर विजय पाइये।

(महाराणा प्रतापसिंह का प्रस्थान और अमरसिंह का प्रवेश)

अमर०--हां चारों ओर संग्राम ही संग्राम है।

पद्मा--कौन अमरसिंह! पुत्र तुम्हारे पिता युद्ध में गए तुम भी जाओ, जाओ बेटा! दुष्ट यवनों की लाश पर लाश बिछाओ।

अमर०--नहीं माता जी, मैं रण में नहीं जाऊंगा।

पद्मा--तो क्या यहां छिप कर प्राण बचाओगे, क्या तुम इस युद्ध के विरुद्ध हो जो संग्राम में नहीं जाओगे, क्या ऐसा करके मुझे व मेरी कोख को दाग लगाओगे।

अमर०--माता जी मेरा विचार तो यह है कि मानसिंह से क्षमा याचना कर इस होने वाली हानि से मेवाड़ को बचा लिया जाय।

पद्मा--तो क्या ऐसा करने से यह होने वाली हानि नहीं होगी नहीं पुत्र यह तुम्हारा कायरपन का विचार है। यदि तुम्हारे पिता जी भी अपना जी चुरायें तो फिर मैं हूं और तलवार है, मैदान में जाऊंगी, शस्त्र चलाऊँगी, उन दुष्ट यवनों की लाश पर लाश बिछाऊंगी, तुम्हें शर्म नहीं आती कि दुष्ट यवनों के सम्बन्धी कुल कलङ्की मानसिंह से क्षमा याचना कराते हो, यदि तुम संग्राम में भय खाते हो तो घर बैठ तेरे बदले मैं जाती हूँ

(क्रोध से जाना चाहती है, अमरसिंह रोकता है)

अमर०—अच्छा माता ठहर जाओ। (पद्मावती का ठहरना)

पद्मा०—क्यों रे क्या कहना है कहो ?

अमर०—(हाथ जोड़कर और घुटने टेक कर) माता तुमने मेरे मन का भ्रम मिटा कर मुझे मेरा कर्तव्य चेता दिया, अभी तक मैं अज्ञान का भूत बना हुआ था तुमने मेरा अज्ञान मिटा दिया। आज्ञा दो माता मैं भी संग्राम भूमि में जाऊं और अधर्मी न्याइयों को मार कर इस जन्म भूमि को पद्द लित होने से बचाऊं।

पद्मा०—हां बेटा जाओ, मोह को त्याग कर तलवार उठाओ, और शत्रुओं के रक्त से इस तलवार की प्यास बुझाओ, पुत्रवर ! मरने को मर जाना परन्तु क्षत्रियों के नाम को कलंक मत लगाना, वो देखो रणभेरी बज रही है, मालूम होता है वीर सेना मैदान में गर्ज रही है, जाओ मेरे लाल यहां बातों में समय न बिताओ।

अमर०—जो आज्ञा माता !

(अमरसिंह का प्रस्थान। सीन ट्रांसफर होना। हल्दी घाटी में महाराणा प्रतापसिंह कृष्णसिंह देवीसिंह चन्दन सिंह अमरसिंह व वीर चन्द्रावत सेना के मध्य में खड़े हैं)

प्रताप०—मेरे बहादुर दिलेरो इस पवित्र जन्म भूमि मेवाड़ के शेरो ! आज परीक्षा का दिन आ पहुंचा, इस हिन्दू धर्म का कलंक मलेच्छ मानसिंह अपने अपमान का बदला चुकाने

आगया, उठो और तलवार संभालो, इस मातृ भूमि का अप-
मान होने से बचालो।

रक्त है यदि वीरता का तो उठा तलवार लो।
दो आहुती प्राण की और रूप यम का धारलो॥

सैनिक नं० १—अन्नदाता! ये तो हमारा कर्तव्य है अपनी मातृ
भूमि की रक्षा में मर जाना, क्षत्रियों का स्वभाव है। सर
देकर बात को अपना लक्ष्य बनाना।

जिस मातृ भूमि ने जन्म दिया उसकी खातिर मर जायेंगे।
जिसकी गोदी में खेले हम उसकी रक्षा कर जायेंगे॥

प्रताप—तो क्या धर्म के लिए सर कटादोगे।

सब—क्षत्रियों के लिये धर्म जाति और देश पर मरना कोई बड़ी
बात नहीं।

प्रताप—यदि ये बात है तो नजदीक किनारा है, शस्त्र उठाओ,
और बढ़ जाओ मैदान··· ·····

सब—हमारा है।

प्रताप—जाओ वीरो, इन पर्वतों की चोटियों पर चढ़ जाओ जब
यवन सेना को घाटी में आया पाओ तो पत्थरों और बाणों
की वर्षा खूब वर्षाओ, ऐसा करते करते मैदान में कूद पड़ो
फिर इस प्रकार से खूंखार होकर लड़ो, कि शत्रुदल चीं
बोल जाए, सिंहों के आगे से एक भी शिकार भाग कर
न जाने पाए।

सब—जगत जननी जगदम्बा की जय!

सेना—जो बोले सो अभय।

सब—हर हर महादेव!

इस प्रकार एक लिंग की जय, महाराणा प्रतापसिंह की जय घोषित करते हुए सब राजपूत व भीलों का पर्वतों पर चढ़ कर छिपजाना। यवन सेनाका आना और घाटी में प्रवेश करना राजपूतों का पत्थर बाण बर्साना यवन सेना का घबराना चिल्लाना मरते गिरते मैदानमें पहुंच जाना तब राजपूतों का भी मैदान में उतर आना। पुनः घोर-घमसान युद्ध होना प्रताप का सलीम पर वार करना, वार चूक कर पीलवान के लग जाना उसका मरना। हौदा टूट जाना। प्रताप का घिर जाना, मानसिंह का प्रताप के समीप पहुँच कर छत्र अपने सिर पर रखना, यवन सेना का उसे प्रताप समझ कर मारना प्रताप का जाना वर्षा होना मेघ का गरजना इसी अवसरपर ड्राप का गिरना

(ड्राप)

❀

अङ्क दूसरा — दृश्य पहला

स्थान-बरसाती नदी का किनारा

(चेतक घोड़े पर सवार महाराणा प्रतापसिंह को जाते हुए

दिखाई देना दूसरे किनारे पर दो यवन सैनिकों का मरे
दिखाई देना पीछे से शक्तिसिंह का आवाज देते हुए प्रवेश)

शक्ति०—ओ जाने वाले घुड़सवार थोड़ा ठहर जाना।

प्रताप०—(स्वयंम हैं, ये जंगल में किसकी आवाज आ रही
शायद ये आवाज मुझे ही बुला रही है (पीछे देख कर
अरे ये तो शक्तिसिंह दिखाई देता है, परन्तु ये कि
अभिप्राय से मुझे आवाज देता है, (कुछ सोच कर
समझा ये मुझ से अपना बदला चुकायेगा, परन्तु क
डर है होगा सो देखा जायगा। यदि प्रताप दुष्ट यवनों
हाथों मरने से तो इस वीर राजपूत के हाथ मर जाये
तो इसमें शक नहीं वीर गति पायेगा। ये वास्तव में वीर
सिसोदिया वंश का रणधीर है (ठहर जाना शक्तिसिंह
समीप आ जाना) आओ शक्तिसिंह आओ, यह गर्द
उपस्थित है। अपना खड्ग उठाओ, और मुझे यम
पठाओ। बुझाओ, इस खड्ग की प्यास मुझे रण से भाग
वाले कायर के ही रक्त से बुझाओ।

शक्ति—(घोड़े से कूदकर और राणा के चरणों में गिर कर
महाराणा, कुल दिवाकर महाराणा मैं आपसे बैर का बदल
नहीं चुकाता हूँ, इस समय तो मैं अपराधी अपने अपरा
की क्षमा चाहता हूँ। भाई साहब मुझे क्षमा करो, मे
अपराधों को हृदय में मत धरो, मैं महान अपराधी हो
केवल आप शत्रुता दूर करके क्षमा कीजिये, मैं सेवक
मुझे अपनी शरण में जगह दीजिये।

प्रताप०—न घबराओ शक्तिसिंह न घबराओ, मेरे हृदयमें तुम्हा

लिए वोही बात है जो-शुद्ध भाव पहले थे, तुमने वास्तव में मुझे बहुत दुःख पहुंचाया, परन्तु तुमने उसे स्वीकार करके मेरे हृदय के भाव को प्रेम के रूप में परिवर्तन कर दिखाया, मैं तुम्हें छोटा भाई समझ कर क्षमा करता हूँ, (कुछ सोचकर) हां परन्तु तुम अचानक इस घोर वन में कुसमय कहाँ से आए।

शक्ति—जब आप युद्ध विरक्त होकर चले आए तो ये दो यवन सरदार आप के पीछे पीछे लगे चले आये, तब मेरे हृदय में एक प्रकार की हलचल सी मच गई। तब मैंने वो दोनों नदी के उस पार ही मार गिराये, वो देखो दुष्ट नदी पार भी आने नहीं पाए।

प्रताप—(उस तरफ देख कर) वीर वर धन्य है सत्य ही किसी ने कहा है।

मिले कुटुम परिवार मिले सुन्दर सी नारी।
धन वैभव मिल जाय मिले सुख सम्पत्ति सारी॥
ज्ञान ध्यान सन्मान मिले सब मान बड़ाई।
नैन खोल 'वेचैन' मिले नहीं बिछड़ा भाई॥

(घोड़े से उतर कर) आओ भाई आओ छाती से लगकर मेरे हृदय कमल की प्यास बुझाओ (अचानक चेतक की ओर देख कर) हैं ये क्या चेतक ! (चेतक का राणा की ओर टक टकी लगाकर देखना और रोना, हिनहिनाना। बहुत प्रयत्न करने पर भी चेतक का प्राण त्याग देना। राणा का चेतक के वियोग में पागल सा हो जाना और शक्तिसिंह का धैर्य बंधाना।)

शक्ति०—पूजनीय महाराणा आप वीर धीर होकर इतने न रो‍इ
ये संसार असार है आप जानते हैं जो इस संसार में ज
धारण कर आता है एक दिन अवश्य संसार को प
त्याग कर जाता है। आप आदर्श पुरुष होकर इतना
रोइये, फिर चेतक ने अपना कर्तव्य पालन करके दि
दिया, जिसने अपने स्वामी की सेवा में ही अपने प्राणों
लगा दिया, अब आप अपना कर्तव्य निभाइये ये लो मे
अंगोरा नामक घोड़ा लेकर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँ
जाइये, आपके जिस्म में जो घाव हैं उन पर कोई औष
लगाइये। (घोड़ा देते हुए) ये लीजिये अब मैं जाऊँगा।

(शक्तिसिंह का घोड़ा छोड़ कर जाना)

(पटाक्षेप)

अंक दूसरा — दृश्य दूसरा

स्थान—अकबर का शाही दरबार

(सब दरबारी यथा स्थान बैठे और खड़े हैं अकवर शाह
तख्तत पर बैठे हुए हैं)

अकबर—अब्बुल फजल ! आगे आओ, रियाया का क्या हाल
है सुनाओ, कहो कहीं हमारी प्रजा किसी प्रकार का कष्ट तो
नहीं पाती है, कहीं सरकारी अहलकारों की बदयानती
से सताई तो नहीं जाती है, कहीं चोर और डाकुओं से
कोई बेचैन तो नजर नहीं आता है, कोई बिचारा आफत
का मारा बेगुनाह तो नहीं सताया जाता है।

अबुल—हुजूर के इकबाल से इस वक्त सब रियाया अमन अमान में है।

फौजी—इस बक्त तो आपके अखलाक का डंका बज रहा है, हरेक आदमी हुजूर की सलामत का दम भरता है।

बीरबल—हुजूर! लोग तो कुछ ऐसा अन्दाजा लगाते हैं, यानी आपकी बादशाहत को राम राज्य ही बताते हैं।

अकबर—हां बीरबल! आप लोग ही इसमें चार चांद लगाते हैं।

(शाहजादे सलीम का प्रवेश)

सलीम—अब्बाजान फरजन्द सलीम आदाब बजा लाता है, और हिन्द फतह की मुबारिकी देना चाहता है।

अकबर—बेटा अल्ला ताला जिसे तुम्हारे जैसा नूर चश्म अता फरमाये, फिर इसके क्या मायने कि उसे किसी चीज की कमी रह जाये, (छाती से लगाना) हां बेटा वो जिसने राजा मानसिंह की शान में तौहीन की, और जिसने मुगलिया खानदान को गालियां दीं, उस मगरूर को दुनियां से मिटाया या जिन्दा ही पकड़ कर ले आया।

सलीम—आलीजाह मेरी अकल ने गलती खाई, उस मगरूर राजपूत ने मैदाने जंग में भाग कर अपनी जान बचाई।

अकबर—(हैरत से) हैं भागकर जान बचाई, तो तुमने उसके पीछे सिपाई क्यों नहीं लगाये?

सलीम—लगाये।

अकबर—तो फिर कैसे निकल गया वह सौदाई।

सलीम—अब्बाजान, जब मैंने उसे भागते हुए पाया, तो फौरन उसके पीछे दो सरदारों को दौड़ाया, यकीन होता है कि

वो दोनों सरदार उसे ठिकाने लगाते, परन्तु उसके भाई शक्तिसिंह ने जिस पर हजार बार ऐहसान किये उसने पीछे से जाकर बरसाती नदी पर मार गिराये, वो बेचारे नदी पार भी न करने पाए।

अकबर—अफसोस उसनें नमकहरामी की, मगर तुम ने उसे दगाबाजी करने का क्या दण्ड दिया।

सलीम—क्योंकि मेरा उससे जांबख्शी इकरार था इसलिए सिर्फ उसे और उसके परिवार को नौकरी से अलहदा कर दिया।

अकबर—तुमनें ये भी ठीक किया, कि एक दगाबाज को सहित परिवार के सरकारी नौकरी से हटा दिया, परन्तु तुम्हें उसका ताआकुब करके उसे जहन्नुम की सैर करानी थी।

सलीम—अब्बाजान हक नावाकिफ और वो पहाड़ी जंगलात, और दूसरे मौसमे बरसात, भला ये काम कैसे हो सकता था।

अकबर—अच्छा क्या बात है देख जाएगा, मुझे मेवाड़ की मुल्क गीरी की ख्वाहिश नहीं, कुछ मालो जर हासिल करने की तमन्ना नहीं, लेकिन उस गुस्ताख को उसकी गुस्ताखी का मजा चखाना है। याद रहे मौसमे बरसात खतम होते ही उस बदमाश पर चढ़ कर जाना है, या तो उस मगरूर राजपूत को दुनिया से हरफे गलत की तरह मिटाना या उस शैतान को जिन्दा पकड़ कर हमारे हुजूर में लाना।

सलीम—आलीजाह! ऐसा ही किया जाएगा।

चोबदार—(प्रवेश करके) आलीजाह दो परदेसी राहगीर आए

हैं आबू के पास डाकुओं ने लूट लिया यह शिकायत लाये हैं।

अकबर--जाओ, उन्हें हमारे हुजूर में ले आओ।

(चोबदार का जाना दोनों परदेशियों का दुहाई देते हुए आना)

अकबर--(दोनों की ओर इशारा करके) बताओ तुम किस के सताये हो हमारे हुजूर में क्या शिकायत लाए हो?

नव आगन्तुक-हुजूर फिदवी सूरत का जौहरी कहलाता था बहुत रत्न लेकर देहली आता था, आबू के पास मुझे डाकुओं ने लूटा और बहुत बुरी तरह से पीटा, हुजूर मैं बर्बाद हो गया। (रोना)

अकबर--घबराओ मत। माल तुम्हें वापिस दिलायेंगे चिल्लाओ मत। (दूसरे की ओर मुखातिब होकर) और तुम क्या कहना चाहते हो।

दूसरा--हुजूर मेरा भी यही हाल है, हमभी इसी तरह पायेमाल हैं, हम बहुत से कीमती तोफा लेकर हुजूर की खिदमत में आता था, डाकू लोग रास्ते में पाया, माल छीना और मारा, आलीजाह का कुछ भी खौफ नहीं खाया।

सलीम--अब्बा जान ये काम प्रताप व उसके साथियों ने ही किया है।

अकबर--हां ठीक है. ये काम उसी मगरूर का है (दोनों से) अच्छा तुम लोग मत घबराओ तुम्हारा माल सब वापिस दिला देंगे और बहुत जल्दी उसको सख्त सज़ा देंगे।

दोनों--बहुत खूब।

(दोनों का आदाब बजाते हुए जाना)

अक०-अच्छा ओ प्रताप! तूने मुगलिया खानानदान की बहुत ही

तौहीन की है। मैं तुझे तेरी गुस्ताखी की सजा जरूर दूंगा।
(गुस्से में एक ओर जाना)

अङ्क दूसरा   दृश्य तीसरा

देहली का मीना बाजार

(चारों ओर दुकानें सज रही हैं जिन पर स्त्रियां सौदा वेच रही हैं। बड़े घराने की स्त्रियां सखियों सहित घूम रही हैं, इसी अवसर पर किरण मई भी सखियों के साथ आती है एक वृद्धा कुटनी उसके साथ बातें मिलती है।)

नसीरन—अये बुआ अगर तुम इस मीना बाज़ार की सैर करना चाहती हो तो मेरे पास क्यों नहीं आती हो, आओ मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें पूरी सैर कराऊंगी, अच्छे अच्छे बाजार और बड़ी बड़ी आला दरजे की चीजें दिखाऊंगी देखो ये बहुत बड़ा बाज़ार है। पहले ही बतादूं, रास्ता भूल जाओगी ये जतादूं, मानो या न मानो मर्जी तुम्हारी दुख पायोगी और करोगी आहो जारी।

किरण मई—परन्तु तुम कौन हो ये तो बताओ, तुम्हारा नाम क्या है ये तो सुनाओ ?

नसीरन—अये वेटी मुझे दुनियां नसीरन कहती है, वन्दी इसी शहर देहली में रहती है। खुदानखास्ता मैं कोई लुच्ची नाकारा नहीं, और कोई चोर या आवारा नहीं, खुदा न करे मैं बटमार व जालसाज नहीं, कोई मैं धोखेबाज व दगाबाज नहीं। आओ मैं सैर कराऊं, तमाम मीना बाजार आखिर से अव्वल तक दिखाऊं।

किरणमई–(स्वयं) समझी, वह कामी कुत्ता अकबर इसी कुतिया के द्वारा अपना मतलब बनाता है। अच्छा मुझे इस के साथ चलने में कोई उजर नहीं करना चाहिए, मैं क्षत्राणी हूँ वो दुष्ट मेरा क्या बनाएगा, यदि दुष्टता दिखाएगा तो नाहक मारा जाएगा। यदि मैंने क्षत्राणी की कोख से जन्म लिया है, यदि मैंने क्षत्राणी का क्षीर पिया है, तो उसकी नीचता का मजा चखादूंगी। यदि उस नराधम का हाथ मेरे गाल से स्पर्श होगया तो अपने प्राण गंवादूंगी, यदि मैं वीर वधु हूँ तो ये नौ रोजा मेला बन्द करादूंगी, वेशक मैं अबला हूँ परन्तु अवसर पर चण्डिका बन कर दिखा दूंगी।

नसीरन—अय कुरबान बेटी क्या रंजो मलाल है, आखिर किस बात का ख्याल है। यदि तुम्हारी तबियत मेरे साथ चलने को नहीं चाहती है। तो सलाम आलेकम, बन्दी जाती है।

(जाना चाहती है, किरण मई रोकती है)

किरण०—अरी बुढ़िया खुरसट ज़रा ठहर जाओ, मुझे भी तो अपने साथ लेचलने की तकलीफ उठाओ।

नसीरन—जाऊं नहीं तो क्या तुम तो न जाने मुझ पर क्या शक करती हो, तभी तो इतनी डरती हो।

किरण०—नहीं मैं तुम पर कोई शक नहीं करती हूँ, और नाही तुम्हारे साथ चलने से डरती हूँ (स्वयं) हरामजादी मुझ से बचकर कहां जाएगी, आज ही तो ये क्षत्राणी तुझ कुतिया व नीच कुत्ते अकबर को दोजख की सैर करायेगी (प्रगट) चलो मुझे सैर तो कराओ जो जो चीज देखने की है वो मुझे दिखाओ।

नसीरन-तो आओ बेटी देर मत लगाओ, (और घातियों की ओर संकेत करके) वो मारा, एक ही तड़ी में पौबारा, आह ये परी जब शहन्शाह की खिदमत में जायेगी, तो बादशाह की तबियत भी सब दिन से ज्यादा खुश हो जायगी, तभी तो बन्दी भी बहुत ही इनाम पायेगी (प्रगट) देखो बेटी ये बजाजा है और इस तरफ सराफा है, देखो कैसे नफीस जेवरात हैं, जिन से चाँद और तारे भी मात हैं। लो और आगे आओ, यदि कुछ लेना चाहो तो लेलो वरना समय बेकार न गंवाओ।

किरण--हाँ चलो मुझे कुछ नहीं लेना है, (स्वयम्) मुझे तो तुम्हारी व उस नीच कुत्ते की जान लेनी है।

नसीरन--देखो बेटी यह देखो मुसावरी कैसी प्यारी है, यह भी औरतों के ही हाथ की दस्तकारी है। कैसी कैसी तस्वीर बनाई है, आहा ये ही हमारे शहन्शाह अकवर की तस्वीर है, आहा क्या नूर है, कैसा खूबसूरत चेहरा गोया जवानी में भरपूर है, और यह है शाहजादा सलीम की तस्वीर, आहा मिजगां क्या हैं तीर हैं तीर।

किरण—(स्वयं) अच्छा कुतिया देख तुझे कैसे तीर दिखाती हूँ।

नसीरन-इधर देखो पनवाड़न, उधर देखो मनिहारन, इधर देखो उधर देखो, यह देखो वह देखो, वहां देखो यहाँ देखो।

(सखियां देखने में रह जाती हैं नसीरन किरणमई को नैपथ्य में ले जाती है सखियाँ किरणमई को न पाकर घबराती हैं। इधर उधर देखती हैं।)

पटाक्षेप

अंक दूसरा **दृश्य चौथा**

स्थान—शाही महल का एक भाग

(अकबर शाह एक सुसज्जित कमरे में बैठा हुआ है)

अकबर—(स्वयम्) आहा मैं कौन मुगल बादशाह अकबर शाह जिस के रौब से हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा खौफ खाता है, वो अकबर हूं, कि जिसके आगे बड़े बड़े राजे महाराजे को चक्कर आता है, मैं वो अकबर हूं कि जिसके आगे बड़े २ मगरूरों का सर झुक जाता है, जब मैं सर जमीने हिन्द पर कदम बढ़ाता हूँ तो जमीन को भी जलजला आता है, जो मेरे खिलाफ सर उठाता है वो उसी वक्त मौत के घाट उतार दिया जाता है, इसलिये मेरा हर गुन्हा मेरी बादशाहत के पर्दे में छुप जाता है, मैं जो चाहूँ कर डालता हूँ, न कुछ देखता हूँ, न भालता हूँ।

गर हवा को बांध दूं वो हिल नहीं सकती।
काफूर से भी आग गोया जल नहीं सकती॥
कांसा मलक का एक इशारे में तोड़ दूं।
आड़े हों गर पहाड़ तो ठोकर से फोड़ दूं॥

(कुछ अफसोस के साथ) ये सब कुछ होते हुए भी चैन नहीं पाता हूँ, हर वक्त किसी न किसी गम में बेचैन हो जाता हूँ, हर रोज वेज़ार, हर रोज नई नई तमन्ना नया आजार, इन हसीन नाज़नीन महजबीनों ने बन्दाये वेदाम बना रखा है यहां तक कि मेरी हवस ने मुझे नफ़स का गुलाम बना रखा है। तमाम जरूरी कामों को लात मार

कर यहां आया हूँ, सुना पृथ्वीसिंह की औरत बहुत खूब-सूरत हसीन है, भबूका है, कहते हैं इस जमाने में गजब की माशूका है। तभी मैंने भी तदबीर चलाई, मगर अभी तक कोई भी मेरी खवासन उसे यहां लेकर नहीं आई, (सामने देख कर) आई आखिर नसीरन चिड़िया को फांस ही लाई आहा कैसा हुस्न वा कैसा नूर कैसा नजरा, ये औरत है या चौदहवीं का चांद, जिसकी एक ही अदा ने मुझे पाश पश कर डाला, या अल्ला ताला ये सीमतन तूने कौन से सांचे में ढाला, या खुदा बन्दा क्या सारी दुनियां का मजाल इसी नाजनी को दे डाला। आहा देखो कैसी मस्तानी चाल है, काले स्याह बाल, मस्तानी चाल से चली आती है, आह मेरा दिल काबू से बाहर हुआ जाता है ठहर ऐ मस्ताना माशूक ठहर अभी तेरे बगल हुआ जाता है।

हुस्न क्या है नाजनी का ये सरापा नूर है।
मस्त है अपने नशे में और मिसाले हूर है॥

(नसीरन के साथ किरणमइ का प्रवेश)

नसीरन—आलीजाह खादमा आदाब वजा लाती है।

किरन—क्यों हरामजादी तेरे दिल में क्या समाई, जो तू मुझे यहां ले आई, ये भी कोई सैर की जगह है जो तूने यहां की सैर कराई।

नसीरन—बेटी घबराने की क्या बात है सैर करो मजे उड़ाओ, जो मजा कभी न पाया हो वो मजा पाओ।

किरण—(एक लात जमा कर) चुप चुड़ेल! अगर जबान चलायेगी तो याद रख जबान खेंचली जायेगी।

नसीरन—आह ! अल्ला···मर···गई···मे···री···तोबा

(प्रस्थान)

किरण—क्यों इस प्रकार पराई बहू बेटियों की इज्जत व हशमत को एकान्त में क्यों बुलाया जाता है, आज मालूम हो गया नीच कुत्ते ये नौरोजा मेंला इसलिए लगाया जाता है, और ये क्या मेरी ओर क्यों बढ़ा चला आता है ।

अकबर—आओ आओ, मेरी जान ! इस कदर नाराज होकर खोटी खरी न सुनाओ, मैं सर जमीन हिन्द का बादशाह हूँ, मुझे कुत्ता न बनाओ, जो कि मैं बादशाह सरनाम हूँ, मगर इस वक्त तुम्हारा गुलाम हूँ, जब से तुम्हारी बेनजीर तस्वीर को देख पाया है, तब से बन्दा ये बेदाम हूँ ।

तुम्हारे हुस्न के शोले से जला बैठा हूँ ।
तुम्हारे हाथ में सरकार बिका बैठा हूँ ।
शिकार आंख के तीरों का बना बैठा हूँ ।
अपने हाथ अय मेरी जान लुटा बैठा हूँ ।
वसले उलफत के लिए जाम लिए बैठा हूँ ।
आपसे मिलने का पैगाम लिए बैठा हूँ ।

(आगे बढ़ना चाहता है)

किरण—(रुख बदलकर और डांटकर) खबरदार यदि एक कदम आगे बढ़ायेगा, तो मेरे सतीत्व की अग्नि में जल कर भस्म हो जायेगा ।

अकबर—अरे मेरी जान ! कहना मानो, जिद मत ठानो, आओ आओ, हंस कर मेरे गले से लग जाओ, देखो, अभी से

हिजरां से मेरा दिल जला जाता है दिल की दहकती हुई आतिश को बुझाओ, आओ मेरे जख्मे जिगर पर मरहम लगाओ, देखो मैं तमाम मुल्क का बादशाह हूँ, कुछ तो मेरे मरतबे का खौफ खाओ, इस तरह मुझे बन्दर समझ कर मत नचाओ।

चुटकियाँ लेले के हँसना ये अदां अच्छी नहीं।
हां हां जाना कि चलनी बरुछियां अच्छी नहीं॥
क्यों बिगड़ बैठे हो मुझसे और ये तकरार क्यों।
इस कदर नाराज होकर करते हो गुफ्तार क्यों॥

किरण०—ओ दुष्ट! अत्याचारी नराधम चाण्डाल। ईश्वर ने तुझे बादशाह बनाया है तो क्या इसलिए कि रियाया को सताये किसी की इज्जत लूटे और तू खुशी मनाये। ओ हवश के गुलाम! और नफस के कुत्ते! क्या तूने सल्तनत पाई है तो क्या इसलिए कि प्रजा की बहू बेटियों को धोखे से यहाँ बुलाये और जबरन उन के सतीत्व को नष्ट करे। ऐ उस ईश्वर से डर, अपने नीच कामों से तोबा कर। बादशाह रइयत का पिता के समान होता है, अपनी औलाद के ऊपर बुरी नीयत करके क्यों अपने मार्ग में कांटे बोता है बता तुझे इन बातों से क्या फायदा।

अकबर—समझा तू यों बाज नहीं आयेगी, मैं जितना गिड़गिड़ाऊंगा तू उतनी ही सर पर चढ़ती जायेगी। देखता हूँ तुझे मेरे हाथ से कौन बचाने आयेगा।

किरण०—वो ही जो चीर खेंचते समय द्रोपदी को बचाने आया था, वो ही जिसने ग्राह से गज को छुड़ाया था।

जब गज ने टेर लगाई थी तो गरुड़ छोड़ कर आया था।
द्रोपद सुताकी लाज राखी और सभा में चीर बढ़ाया था॥
अबला की लाज जहाज के हित वो अब भी बनके आएगा।
जो सब का पालन करता है, वो मेरी लाज बचाएगा॥

अकबर—(क्रोधित होकर) आयेगा तो देखा जाएगा।

(पकड़ना चाहता है) किरणमई अवसर पाकर अकबर को पृथ्वी पर पछाड़ देती है। कमर में छिपी हुई कटार तान कर छाती पर चढ़ जाती है।

किरण०--(खूंखार होकर) बोल ओ नीच कुत्ते। अब तेरा क्या हाल बनाऊं, बता नफ्स के गुलाम तेरा काम तमाम करके तुझे दोजख में पठाऊं, बता जिस राज्य पर तुझे इतना अभिमान है अब तेरे किस काम आएगा, क्योंकि कुछ देर बाद तू नर्क की हवा खायेगा, क्योंकि जो तेरे पाप हैं उनका दण्ड तू यमराज से पायेगा।

हाथ जो अबला पै उठते थे उन्हें अब तोड़ दूं।
बद नज़र देखा था जिनसे अब वो आंखें फोड़ दूं॥
इस बदन को चीर कर चीलों के आगे डाल दूं।
दिल में आती है पापी नोच तेरी खाल दूं॥

अकबर--रहम कर वीर क्षत्राणी रहम कर (आर्त ध्वनि से गिड़गिड़ा कर)

किरण०—ओ दुष्ट अत्याचारी! ओ कामी कुत्ते व्यभिचारी ओ नीच रहम के भिखारी, मीना बाजार की आड़ में अत्याचार करना, ओ दुष्ट टट्टी की ओर शिकार करना तूने इस प्रकार बहुत सी अनजान बालाओं को अपने बाहुपाश में फंसाया है, बहुत सी सती देवियों का इस

प्रकार से सत्य डिगाया है, आज उन पापों के दण्ड
पाने का समय आया है, ले आज अपने पापों का दण्ड
पाले, और लाश पर रोने के लिए उन हरामजादी बेगमों
को भी यहां बुलाले, देखें कौन है जो तुझे मेरे हाथों से
बचाले।

आज तक तो तू रहा इस बादशाही दून में।
पर न्हाना आज होगा तुझको अपने खून में॥
देखले छाती पे तेरी क्षत्रियों की नार है।
आज तू है तेरी गर्दन और मेरी तलवार है॥

(मारने को उद्यत होना अकबर का घबराना)

अकबर—माफकर बहन किरणदेवी मेरे गुनाह माफ कर वाकई
में मैं गुनाहगार हूं, मेरी हमशीरा, मैं तेरे हर हुकम को
मानने को तैयार हूं मैं हलफ उठाता हूं, कुरान की कसम
खाता हूं अब से किसी औरत को नहीं सताऊंगा।

सबकी बहन और बेटियों को एक सा जानूंगा मैं।
आज से रब की कसम तुम को बहन मानूंगा मैं॥

किरण—नहीं तेरा अब मेरे हाथों से बचना मुहाल है, क्योंकि
तू अव्वल दर्जा का चाण्डाल है देख तुझे तेरी करनी का
नतीजा अवश्य दूंगी, तेरे इस नापाक खून से अवश्य ही
इस कटारी को रंगूंगी।

अकबर—(वीर क्षत्राणी के चरण पकड़ कर) तोबा, तोबा, मेरी
तोबा, वीर क्षत्राणी मुझ पर रहमकर। मैं खुदा की कसम
खाता हूँ और मैं हमायूं का बेटा हूँ और कावे की तरफ
हाथ उठाता हूँ अब कभी ऐसे नीच काम को हाथ न
लगाऊंगा, अब के बाद कभी ये नौरोजा मेला न

कराऊंगा, बस मुझे माफ करो, मुझे अपना भाई समझ कर मेरी तरफ से दिल साफ करो।

किरण--(छाती से उतर कर) जा मैंने तुझे माफ किया, तेरे कौल को देख मन साफ किया।

मैं तेरे कौल के माफिक तुझे अब माफ करती हूँ।
तुझे भाई समझ कर अपने मनको साफ करती हूँ॥

अकबर--(स्वयं) शुक्र है मेरे मौला जो तूने मेरी जान बचाई (प्रगट) देवी मैं तोबा करता हूँ, और आज तक मैंने जो गुनाह किये हैं उनकी तलाफी करता हूँ, तुम्हारा बहुत एहसान मानूंगा, और आज से औरों की बहन बेटियों को अपनी बहन-बेटी जानूंगा, मगर यह राज़ किसी के सामने अफशां न कीजिये, बस एक मेरा यह कहना मान लीजिए।

किरण नहीं भाई अकबर मैं ईश्वर को साक्षी करके कहती हूँ कि क्षत्राणी हूं, ये क्षत्राणी कभी अपने कौल से नहीं फिरेगी तू फिक्र न कर कभी तेरी बहन तेरा राज़ अफशाँ नहीं करेगी, मगर याद रहे कभी किसी हिन्दू औरत को मत सताना, कभी जान बूझ कर नाग को मत खिलाना, और आज से कभी ये नौ रोजा मेला न कराना।

अकबर--नहीं, मैं तुम्हारे एहसान को ता उम्र नहीं भुलाऊंगा और खुदा को हाजिर-नाजिर करके कहता हूं कि अब ये नौ रोजा मेला कभी नहीं कराऊंगा।

किरण०--अच्छा मेरे घर पहुँचाने का प्रबन्ध करो और मुझे मेरे घर पहुँचाओ।

अकबर--हां अभी लो ताली बजाना और कहारों का मय डोले के आना और किरणमई को ले जाना और अकबर का माथा टेक कर खुदा का शुकराना अदा करना)

अकबर--या इलाही तेरी दरगाह में हजारबार शुक्र है जो इस पाक दामन औरत ने मुझे गुनाहों से अलग किया, ऐ पाक परवरदिगार इस नेक दिल औरत का भला हो जिसने मुझे सोते से जगा दिया, मैं तेरी जात पाक की किस मुंह से तारीफ करूं।

(पटाक्षेप)

अंक दूसरा — दृश्य पाँचवाँ

स्थान--पहाड़ी घाटी

(पालनों के बजाय बालक टोकरियों में झूल रहे हैं रानी पद्मावती खाना बनाती है। कृष्णसिंह व प्रताप आपस में वार्तालाप करते हैं।)

प्रताप--कृष्णसिंह जी आइये कोई समाचार नया सुनाइये।

कृष्ण--हां महाराज एक नवीन समाचार पाया है, कुमर अमर सिंह ने फरीद खां मुगल सेनापति को सेना सहित घेर कर अरावली की घाटी में फरीद खां के अलावा सब को मार गिराया है।

प्रताप--फरीद खां कौन फरीद खां ?

कृष्ण--वोही अकबरका सेनापति जिसने आपको जिंदा पकड़ने का बीड़ा उठाया था। वो बड़े अभिमान के साथ बढ़कर आया था, कुमर अमरसिंह ने उनसे युद्ध भी न किया

और सेना सहित पहाड़ पर चढ़ कर ईंट पत्थर और तीरों से घाटी में घुसते ही समस्त शत्रुओं को मौत के घाट उतार दिया, और घाटी के द्वारों को बन्द कर बुरी तरह से संहार किया, केवल फरीदखां बचा सो उस को कद कर लिया, अब हम उसकी दुष्टता का मजा चखा देंगे। (तलवार सूंत कर) इस तलवार को खून पिलाकर इसकी प्यास को बुझा देंगे।

प्रताप—कृष्णसिंह एक कैदी के साथ ऐसा बर्ताव करना नीति के विरुद्ध है, अतएव निशस्त्र पर शस्त्र उठाना वीर का काम नहीं है।

कृष्ण०—महाराणा जी ! हाथ आए शत्रु को छोड़ देना कहां की दानाई है, शत्रु के साथ उदारता करना ठीक नहीं है। यदि आप इस प्रकार सब पर दया करेंगे, तो प्रण कैसे पूरा करेंगे, भला फिर ये दुष्ट कैसे डरेंगे।

प्रताप--कृष्णसिंह जी वीर आर्य सदा दया भाव रखते हैं, क्योंकि ये स्वाभाविक आभूषण है, भला मैं इस स्वभाव को कैसे त्यागदूं ?

कृष्ण—महाराज यदि शत्रुओं के साथ यह व्यवहार किया जाएगा तो याद रक्खो ये बर्तावा एक दिन बुरा रंग लायगा।

उगले एक दिन जहर जो उसको दूध पिलाया।
पिंजरे में था कैद सुवा जो मीठा भाया॥

प्रताप—ये व्यवहार इसलिए किया जाएगा कि वो आँख वाला अन्धा अकबर होश में आ जायेगा, तभी तो वो अपने नीच कर्तव्य से बाज आयेगा।

कृष्ण—महाराज भला गुलाम अवगुण को छोड़ सकता है।

नीच तजे नहीं नीचता, करलो लाख उपाय।
जैसे खटरस के परत (दूध तुरंत फट जाय ॥

प्रताप०--यह तो सत्य है परन्तु उसको सोचने और समझ दीजे अब तो एक बार उस पर कृपा ही कीजे।

कृष्ण०—महाराज ! इस दया भाव ने ही इस भारत को पराधी कर दिया, इस दयाभाव ने हमारे राष्ट्र को पतन की ओ खींच कर हिन्दुत्व को मिटा दिया। यदि वीर पृथ्वीराज मोहम्मद गौरी को दया न दर्शाता तो इस वीर भारत ये हाल कदाचित् न होने पाता। इसलिए इस दया डा को अलग हटाने दो, और उस दुष्ट फरीद खां को सदैव लिये इस दुनियाँ से मिटाने दो।

प्रताप०—कृष्णसिंह जी क्या करूं निशस्त्र पर प्रहार करने 'मेरा मन आज्ञा नहीं देता।

कृष्ण०--अच्छा महाराज भला यह बता दो कि इस प्रकार यवनों के फन्दे में पड़ जायें, तो क्या जीवित बच जायें असम्भव है, इसलिए आज्ञा दीजिए।

प्रताप०—नहीं कृष्णसिंह ऐसा अनुचित कार्य मत कीजिये।

कृष्ण०--महाराज कुछ भी हो उस खूनी भेड़िये को अवश्य प्रा दण्ड देंगे, उस दुष्ट यवन को अवश्य मारेंगे और बद लेंगे।

प्रताप०—बदला किस बात का ?

कृष्ण०—महाराज यही खुशामदी टट्टू अकबर को भड़काते हैं बहादुरी जताते हैं, रंग चढ़ाते हैं, यही कुत्ते हमारी मा भूमि को पददलित करने आते हैं। इन्होंने ही हमारे

क्षर छुड़ा दिये, इन्होंने ही हमें निर्धन और भिखारी बना दिये। यदि ऐसे दो चार दुष्टों को करनी का दण्ड मिल जायेगा तो कोई इस ओर आने को सर नहीं उठायेगा, इसलिए इस दुष्ट को मिटाने दो, कुछ तो जन्मभूमि को शान्ति पहुंचाने दो।

प्रताप०—कृष्णसिंह जी हमें तुम्हें किसी के पापों से क्या प्रयोजन और क्या हक है जब स्वयं ये झगड़ा ईश्वर चुकाता है। जो जैसा करता है वो स्वयं उसका फल पाता है।

कृष्ण०—ईश्वर, ईश्वर कहाँ है ईश्वर ? यदि ईश्वर होता तो निसहाय गरीबों पर दुष्टों के अत्याचार कदाचित् न होने देता, भला ईश्वर होता तो पापियों को छोड़ पुण्य आत्मा महाराणा प्रतापसिंह जैसे देश भक्तों को सहारा देता, यदि ईश्वर है तो उन पापी मलेच्छ गऊ-भक्षक मुगलों को क्यों नहीं मिटाता, यदि ईश्वर है तो निर्धनों वा गऊओं की पुकार सुन कर क्यों नहीं आता।

प्रताप०—शान्त कृष्णसिंह जी शान्त ! ईश्वर की शान में अपशब्द न कहिये, ईश्वर नियमानुसार दुष्टों का पतन करता है ईश्वर सब देखता है, ईश्वर सर्वत्र मौजूद है इसलिए शान्त रहिये।

कृष्ण०—है ईश्वर है कहाँ है किधर है मुझे तो आज तक नजर नहीं आया, निस्सहाय निर्बलों पर नित्यप्रति अत्याचार होते हैं परन्तु ईश्वर किसी को भी बचाने नहीं आया फिर आप कहते हैं कि ईश्वर है।

प्रताप०—कृष्णसिंह जी अपने आपको सम्भालो, अनुचित शब्द

मुंह से बाहर मत निकालो, दुश्मन को जान से मत मारो बल्कि एहसान से मारो।

भूल जायेगा वो दुश्मन जान से मारा हुआ।
आप मर जाता है खुद एहसान का मारा हुआ॥

कृष्ण०—(कुछ सोच कर) हां महाराज क्रोधवश होकर आप की बात न माना, घुटनों के बल पर बैठ कर चरण छूकर) राणा जी क्षमा करिए। नाहक आप के उपदेश को मिथ्या जाना, भूला महाराज, मैं भूला जो मैंने आपको उचित व अनुचित उत्तर दिये और भगवान को भी नहीं पहचाना, क्षमा राणा जी क्षमा।

प्रताप—कृष्ण जी आप न घबराइये, मैंने क्षमा किया खड़े हो जाइये।

बाहर से—महाराणा प्रतापसिंह की जय!

प्रताप—ये आवाज कहां से आई?

कृष्ण—शायद कुँवर अमरसिंह आते हैं, वो ही जय ध्वनि सुनाते हैं। (अमरसिंह सेनिकों सहित आते हैं)

अमर०—पिता जी प्रणाम।

प्रताप०—चिरंजीव रहो बेटा (फरीदखां को देखकर) और ये क्या बेटा? ये कौन है?

अमर०—पिता जी ये हमारे शत्रु का तरफदार, हमारा दुश्मन और पराजय का शिकार, जिसने आपको जिवित बन्दी बनाने का बीड़ा उठाया था, बिचारा आप ही फंस गया जो आपको फंसाने आया था, अथवा रोजे गले पड़ गये ये तो नमाज बख्शवाने आया था, अथवा बादशाह से खिलवत पाने की तमन्ना लाया था, अब जो हुक्म दिया

जाय, वोही सलूक इसके साथ किया जाय।

प्रताप—फरीद खां, जिसको तुम पकड़ने आए उसको पहचानो और देखो मेरा नाम प्रताप है, आया था मुझे कैद करने मगर कैदी आप है, अब तू ही बता कि तेरे साथ क्या सलूक किया जाय।

फरीदखां—रहम राणा जी रहम।

प्रताप देखो फरीदखां! यदि मैं चाहूँ तो तुम्हें जिन्दा दबवादूं यदि मैं चाहूं तो तुम्हारी खाल निकलवाकर भुस भरवा दूं, और मैं चाहूँ तो तुम्हें उल्टा लटकवा कर खत्म करवादूं और यदि मैं चाहूँ तो कुत्तों से फड़वादूं, परन्तु नहीं मैं निशस्त्र और विवश शत्रु के साथ ऐसा सलूक नहीं करता हूँ क्योंकि मैं हिन्दू हूं, ईश्वर से डरता हूं, इसलिए तुम्हें क्षमाकर आजाद करता हूँ, (अमरसिंह से) बेटा अमर-सिंह इसे छोड़ दो, यह बाल बच्चों में जायेगा, यदि असल का होगा तो अब यहां कभी नहीं आयेगा, (अमरसिंह का आज्ञा पाते ही छोड़ देना)

फरीदखां—(आश्चर्य से स्वयम्) शाबाश हिन्दू शेर शाबाश, बहादुर दिलेर महाराणा प्रताप मैदान में शिकस्त पाने से अधिक यहां शिकस्त पाई खुदा तझे तेरे इरादे में काम-याब करे।

प्रताप—फरीदखां! तुम आजाद हो जहां चाहो जाओ तुम्हें अगर किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो लेजाओ और उस अकबर से कह देना कि प्रताप जब तक जीवित है मारेगा या मरेगा और ताजिन्दगी तक कभी सन्धि नहीं

करेगा, सन्धि का प्रताप से बिचार करना और ओस से प्यास बुझाना बराबर है।

फरीद०--(स्वयम्) आहा यह कि सकदर शजाअत से भरा हुआ दरबार है, जहां से जाने के लिए कदम उठाना भी दुशवार है, महाराज मैं जाता हूँ आपका एहसान ताजिन्दगी को अपने साथ लिए जाता हूं, महाराणा जी अलविदा।

(प्रस्थान)

पद्मा--(प्रवेश करके) स्वामी रसोई पाईये।

प्रताप--शीघ्र ले आइये।

पद्मा--जो आज्ञा स्वामी।

पद्मा का जाना और पत्तों पर वन फलों का शाक और घास फूस से सिकी हुई रोटी लेकर आना और महाराणाप्रताप सिंह का खाने को ग्रास तोड़ना और राजपूत व भीलों का भी एक थाल में खाने को तैयार होना और एक राजपूत का दौड़ते हुए आना।

राजपूत--महाराज यवनों का दल गर्जता हुआ आता है सेवक अभी ये समाचार लेकर आता है।

प्रताप--यहां से किती दूरी पर है।

राज--कोई सौ कदम पर।

प्रताप--(खाना छोड़ कर) कोई चिन्ता नहीं, छः बार खाना छोड़ना पड़ा है यदि सहस्र बार भी छोड़ा पड़े तो घवराऊँगा नहीं, जब भाग्य में होगा तब खाऊँगा, कृष्ण सिंह जी आप स्त्रियों व बच्चों को लेकर गुप्त मार्गों द्वारा सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाइये, हम भी वहीं आते हैं।

कृष्ण—जो आज्ञा राणा जी।

(स्त्रियों को लेकर कृष्णसिंह का एक ओर से और दूसरी ओर से साथियों सहित राणा जी का प्रस्थान)

अंक दूसरा दृश्य छटवाँ

स्थान—भीमगढ़ का दुर्ग

(कुमार चन्दनसिंह का इधर उधर टहलते हुए नजर आना)

चन्दन—आहा आज भीमगढ़ के भी भाग्य उदय हो गये जो हिन्दू पति महाराणा प्रतापसिंह आज परिवार सहित यहां आए, पिताजी भी तो महाराणा जी के साथ युद्धस्थल को धाये, और यहां की रक्षा मैं करूँगा, आज का दिन मेरे लिए सौभाग्य का दिन होगा जो बड़े भाग्य से पाया है, ये अवसर ही जीवन सफल बनाने को हाथ आया है। मैं भी आज अपने बल पराक्रम का परिचय दूंगा, आज मैं भी देश भक्तों की तुच्छ सेवा करके अपना जीवन सफल बना लूंगा।

शस्त्र उठाऊं हाथ से हिला देऊं ब्रह्मांड।
बाणों की वर्षा करूं काटूं रुंड और मुंड॥
जब झपटूं संग्राम में करदूं खण्ड।
प्रलय रूप अब धारकर हिला देऊं ब्रह्मांड॥
शत्रुन को मैदान में दूंगा मृत्यु दण्ड॥

तेजसिंह—(प्रवेश करते हुए) वीर चन्दनसिंह यवन सेना आ पहुंची। यहां भी घेरना चाहती है, निश्चय जानो आज भीमगढ़ को भी फेरना चाहती है।

चन्दन०—अरे तुम इतना क्यों घबराते हो, जो बात है विस्तार पूर्वक क्यों नहीं बताते हो ?

तेजसिंह—अरे इतना समय पाऊं तभी तो विस्तार पूर्वक बताऊं शहबाज खां सेना सहित इधर आता है, वो दुष्ट महाराणा जी के परिवार को मिटा देना चाहता है।

आज तो संग्राम में हम वीरता दिखलायेंगे।
कत्ल कर मुगलोंको उनका खून भी पी जायेंगे॥
दुष्ट मुगलों के लिए अब काल सम बन जायेंगे।
कुटुम्ब राणा का बचे चाहे हम मर जायेंगे॥

चन्दन--अच्छा यदि यह बात है तो तलवार हमारे हाथ है। तो रणचण्डी विजय देवी हमारे साथ है, अच्छा देखो तुम जाओ, और सुरंग के मार्ग से हिन्दू पति महाराणा प्रतापसिंह के परिवार को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाओ, जाओ देर मत लगाओ।

तेज०--यदि यवनों ने पता पाया तो।

चन्दन०--तो स्वयम मरजाओ राणाजी के परिवार को बचाओ, मैं उनको सारी रात लड़ाई में लगाये रखूंगा, तुम मत घबराओ।

तेजसिंह--अच्छा अभी जाता हूँ।

(तेजसिंह का प्रस्थान और दुर्जनसिंह और वीरसिंह का प्रवेश)

दुर्जन--चन्दनसिंह यवन सेना समीप आगई, हमें आज्ञा सुनाओ अब हम क्या करें शीघ्र बताओ।

वीर०—बताओ चन्दनसिंह जी ऐसे कठिन समय में हमको क्या करना चाहिये।

चन्दन--करना क्या चाहिये मारना और मरना चाहिये।

मार दो शत्रु के दल को आज वीरो खेलकर।
देश की रक्षा करो अब अपनी जां पर खेल कर॥
आज कर्तव्य पथ पर ही चलकर दिखाना चाहिये।
प्राण देकर देश को वीरो बचाना चाहिये॥

प्रताप—दुर्जनसिंह जाओ वीरों को सजा कर मैदाने जंग के लिए तैयार करो, हमारी रण भेरी का इन्तजार करो, जब मेरी रण भेरी सुन पाओ तो भूखे बाघ की भांति एकदम मुगलों पर गिर जाओ, जो तुम्हारे आगे आये चीरो, फाड़ो और खाओ।

दोनों—जो आज्ञा, अभी जाते हैं।

(प्रस्थान)

(सुधामई क्षत्रियों के साथ आती हैं)

सुधामई—बेटा चन्दनसिंह! आज तेरे उत्साह ने मेरे हृदय में एक प्रकार का प्रकाश सा कर दिया, धन्य है मेरे लाल, तुमने अपनी माता की कोख को उज्जवल करके दिखा दिया, आज तेरी कीर्ति से तेरी माता का भी ऊंचा माथा है, जा बेटा जा, जग जननी जगदम्बा तेरी रक्षा करने को तेरे साथ है।

चन्दन०—माता जी ये आप ही की स्वच्छ शिक्षा का फल पाया है, आपने ही तो मुझे इस योग्य बनाया है।

(चन्दनसिंह का जाना, दूसरी ओर से एक राजपूत का आना)

राज०—माता जी राणा जी के परिवार को तो एक सुरक्षित स्थान पर पहुंचा आये हैं, अब आप भी चलिये आपको लेने आये हैं।

सुधामई--हमारी कुछ चिन्ता मत करो, हम स्वयं ही अपनी रक्षा करने को तैयार हैं, हम भी पूर्वजों की भांति तलवार चलायेंगी, इस जननी जन्म भूमि के लिए हम मारेंगी या मर जायेंगी।

लेके जब तलवार को जायेंगी रण में देवियाँ।
मान दुश्मन का घटायेंगी ये रण में देवियां ॥

जाओ हम अपना कर्तव्य निभायेंगी, तुम अपना कर्तव्य निभाओ, जाओ मातृ भूमि के लिए तुम स्वयं बलि हो जाओ, या शत्रुओं के शोणित से मातृ भूमि के तपते हुए हृदय की अग्नि बुझाओ, जाओ क्षत्रियों के यश व कीर्ति का डंका इस समस्त वसुन्धरा पर जा बजाओ, जाओ नाहर की भाँति गर्जना कर अरि के हृदय को कम्म्पायमान करदो, जाओ जन्म भूमि तुम्हारी ओर कातर होकर निहार रही है, वो देखो वो देखो मातृ भूमि तुम्हें अपनी रक्षा को पुकार रही है, जाओ वीरो शत्रुओं की लाश से इस वसुन्धरा के जख्मों को भर दो, और देवियां, तुम भी जाओ ये अपना कर्तव्य निभायें, तुम अपना कर्तव्य निभाओ।

(क्षत्रियों का जाना दूसरी ओर क्षत्राणियों का प्रस्थान)
सीन ट्राँसफर होना, चन्दनसिंह का रण भेरी बजाना
राजपूतों का जयघोष करते हुए आगे उत्साह
से बढ़ना और जोश में तलवार खींचना।

चन्दन०—वीरो देखो, वीर क्षत्राणियों ने अपना कर्तव्य पालन करके दिखा दिया, देश सेवा और जाति की मर्यादा को पूर्ण रूपसे निभा दिया, जाओ अब केहरी वीरो, तुम

भी अपना कर्तव्य पालन करके दिखाओ, मैदान में नाहर की भांति बढ़ जाओ, मार दो या मर जाओ।

कीर्ति फैलायेंगे मर कर के इस संसार में।
दम है खम और जौहर है अभी तलवार में॥

धुंए से अंधेरा होना, बन्दूकों की गोलियों की वर्षा होनी, सेना का खूंखार होकर लड़ते दिखाई देना, चन्दनसिंह इत्यादि वीरों का संग्राम करना, चन्दनसिंह का गिर कर मारा जाना, राजपूतों का हटना।

ड्राप सीन

अंक तीसरा — दृश्य पहला

स्थान–अरवली की घाटी

(हिन्दूपति महाराणा का शिला पर लेटे हुए नजर आना —पद्मावती का चरण दबाते हुए नजर आना)

पद्मा--(स्वयं) संसार में स्त्री का पति सेवा ही में कल्याण है, नारी का पति के चरणों ही में आदर-मान है, जो स्त्री दुख में या सुख में पति सेवा में ही लग कर ही अपने को धन्य मानती है, दुख और सुख को एक समान जानती है वो ही आदर और सम्मान प्राप्त करती है, जो दुख में पति से विमुख हो जाती है, वो ही नाना प्रकार के दुख पाती है, क्योंकि स्त्री के वास्ते पति ही सर्वस्व है पति ही भगवान है सती को पति बिना सुख भी अपार नर्क के समान है।

पद्मा—स्वामी न चून है न रोटी है।

प्रताप—(स्वयम्) आह ! जब किस्मत ही खोटी है तो चून है न रोटी है। हे भगवान हे भगवान ! ऐसे कौन से हमारे पाप सामने आये, जो मेवाड़धिपति की संतान घास फूंस की रोटी भी न पाये। हे प्रभु ! यदि आकाश मुझ पर टूट पड़े मैं दब जाऊं तो ये दुःख मैं सहन कर सकता हूँ, और यदि पृथ्वी फट जाये मैं समाजाऊं तो यह भी सहन कर सकता हूँ, परन्तु इस प्यारी संतान के कष्ट को कैसे सहूँ, यह दुःख इनको देख कर मैं कैसे जीवित रहूँ।

उदय कौन से जन्म के हुए प्रभु जी पाप।
देखे जाते हैं नहीं बालक के सन्ताप॥

पद्मा—स्वामी आप इतने निराश न होइए, इस कदर मत रोइये

प्रताप—प्रिये पद्मा ! बस दुखों की हद हो चुकी, अब मैं इनके सन्तापों को सहन नहीं कर सकता, अब मैं अकबर से संधि कर लूंगा।

पद्मा—हैं ! क्या कहा सन्धि ?

प्रताप—हां प्रिये ! इस सन्ताप से तो सन्धि कर लेने में ही भलाई है।

पद्मा—हैं ये क्या स्वामी ! क्या गंगा सागर से लौट कर ऋषिकेश को जायेगी, क्या आकाश नीचे और पृथ्वी ऊपर हो जाएगी।

प्रताप—हां प्रिये ! क्या करूं इन अनजान बालकों का ये दुःख कैसे सहन करूं।

मात पिता और भ्रात सब, धन वैभव सब होय।
पतिविन सति को शून्य है काम न आवे कोय ॥
(लड़की का जागना और माता के पास आना)

लड़की—मां भूत लगी है लोती खाऊंगी।

पद्मा—(सान्त्वना देते हुए) वेटी मत घबरा, सामने जा पत्थर को हटा, उसके नीचे से रोटी निकाल ला और बैठकर खा।

लड़की का जाना पत्थर हटाकर रोटी निकालना, एक जंगली विलाव का आना और रोटी छीन कर भाग जाना।

लड़की- (रोकर) माता लोती ले गया।

पद्मा—हां मेरी बच्ची यह रोटी उसके ही भाग्य की थी मैं और बना दूंगी, तब खालेना, जव भाग्य में हो तव पालेना।

लड़की—मैं तो अभी थाऊंदी नहीं तो भूती मल दाऊंदी।

(लड़की के रोने की आवाज़ सुनकर राणा जी का जाग जाना)

प्रताप—क्यों ये कन्या क्यों रुदन मचाती है, आखिर ये क्य चाहती है।

पद्मा—महाराज, यह भूखी है, रोटी बिलाव ले गया यों डकराती है।

प्रताप—ओ और दो या समझाओ, (कन्या से) वेटी और बनाते हैं खामोश हो जाओ।

लड़की—राणाजी से लिपट कर) पिता जी...भू...त...बहुत....

प्रताप—(पुचकार व आंसू पोंछ कर) बस मेरी बेटी बस और बनती है जाओ प्रिये रोटी ले आओ।

पद्मा—(इधर उधर देख कर) नाथ...

प्रताप—क्यों क्या बात है ?

पद्मा०—स्वामी महाराणा प्रताप होकर अपने नाम को कलंक न लगाइये, ये बालकों का मोह अपने हृदय से अलग हटाइये आप राजपूत कुलभूषण बापा रावल की सन्तान होकर ऐसा न कीजिये स्वामी आप ध्यान करिये कि आप संग्रामसिंह के वंशधर हैं, ऐसा करने से उनके नाम को कलंक लग जायगा आप हमारी चिन्ता न करो, जो कठिन व्रत आपने लिया है उसे प्राण रहते पूरा करो।

प्रताप०—प्रिये यह तो आप सत्य कहती हो परन्तु क्या बताऊं प्रतिज्ञा पालन में बहुत जोर लगा लिये, सहस्त्रों वीर रण-धीर बलि चढ़ा दिए, बहुत सी क्षत्राणी विधवा तथा अनेक माता निपुत्री बनाईं, और अपनी सन्तान भी दाने दाने को तरसाई, परन्तु फिर भी प्रतिज्ञा पूर्ण न हो पाई आखिर हार कर उस दयाल अकबर से सन्धि ठहराई।

पद्मा०—प्राणेश्वर! पिता से अधिक सन्तान पर माता का स्नेह होता है इसलिए सन्तान की हालत पर मुझे दुखी होना चाहिये न कि आपको रोना चाहिए, परन्तु मैं अभी तक नहीं घबराई, मैं अपनी सन्तान को खाना न देख कर कदाचित भी मैल अपने हृदय पर न लाई, फिर आप व्यर्थ क्यों घबराते हैं, इस थोड़ी सी परीक्षा में प्रतिज्ञा को भूले जाते हैं।

कृष्ण०—पूज्य, ऐसा न कीजिये। ऐसा करने से वीर राजपूतों का साहस टूट जाएगा, उनका रहासहा भी उत्साह मिट्टी में मिल जाएगा और इस हिन्दू धर्म के माथे पर कलंक लग जायेगा।

प्रताप—कृष्णसिंह जी सिवाये इसके और क्या बनाऊं, जब स्वयं भगवान ही मुझ से अप्रसन्न हैं तो मैं क्या जोर लगाऊं। जब ईश्वर ही मेरी विजय नहीं चाहता है तो मेरा थोथा साहस किस काम में आता है, आप ही बताइये जिस युद्ध में हमने कदम बढ़ाया क्या वह विजय भी कर पाया, इस लिये अकबर से सन्धि करना ही मुझे सुहाता है, इसलिये आप भी मुझे विवश न करके मेरे विचार में सहमत हों क्योंकि अब मुझे इसी में भला दीखता है।

सब—(उदास चित्त होकर) जो महाराणा चाहें सो ही बनायें।

(सब का शोक में हो जाना सन्धि पत्र लिखा जाना)

अंक तीसरा — दृश्य दूसरा

स्थान—पृथ्वीसिंह का महल

(पृथ्वीसिंह का महाराणा प्रतापसिंह का सन्धि पत्र पढ़ते हुए उदास हो जाना और किरणमई का प्रवेश)

किरणमई—नाथ आज आप को बहुत चिन्ता व्याप रही है। आखिर इसका क्या तात्पर्य है। कुछ बताइये स्वामी मैं आप की धर्म पत्नि हूं मुझ से मत छुपाइये।

पृथ्वी—प्राणवल्लभे क्या बताऊं क्या सुनाऊं, आज मेवाड़ के भाग्य का सूर्य अस्त होना चाहता है, इसीलिए मुझे इतना आश्चर्य आता है, यदि तुम्हारे ताऊ मेवाड़ की स्वाधीनता के लिए अपने प्राण गंवा देते तो ठीक था। और यदि पराजित हो जाते तो अपने हृदय को समझा लेते, और यदि यवनों की कैद में पड़ कर भी कष्ट पा

लेते तो भी हम अपने को धन्य मानते परन्तु खेद है कि उन्होंने इन बातों के अलावा........

किरणमई—हां, हां स्वामी बताओ क्या किया ?

पृथ्वी०—हो चुका, हो चुका मेवाड़ का उद्धार हो चुका, शोक अब क्षत्रिय जाति की मान-मर्यादा मिट्टी में मिल जायेगी जिस सिंह की घोर गर्जना ने यवनों के हृदय को आजतक कंपाया था जिस वीर की विजयी तलवार ने शत्रुदल को मिट्टी में मिलाया था, अथवा जो महाराणा प्रतापसिंह आज तक हिन्दू धर्म की मान मर्यादा कायम रखने को प्राण प्रण से लड़ा था, वो ही महाराणा प्रतापसिंह इस पत्र के रूप में अकबर के सामने भेड़ व बकरी बन कर खड़ा है, लो अपने ताऊ की लिखी लेखनी को पहचान कर बताओ कि क्या ये उनके ही हाथ का लिखा है ?

किरण मई—(पत्र को पहचान कर) हाँ प्राणेश्वर ! यह पत्र तो उन्हीं के हाथ का है और जो पत्र उनके पहले आए हैं उन्हीं से मिलता है, परन्तु मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने यकायक सोचा क्या है, परन्तु यह आप के हाथ कैसे आया इस पत्र को कौन लाया ?

पृथ्वी०—प्रिये इस पत्र को एक राजपूत लाया, मैंने लेख पहचानते ही इसे धोखा बताया, अकबर को बहकाया, इसकी असलियत का भेद लगाने को मुझे ही ठहराया और जब तक मैं इसकी असलियत का भेद बादशाह को लगाकर नहीं दूंगा तक तक उनके खिलाफ कोई काररवाई नहीं की जायेगी, जरा पढ़ो और सोचो तो, तुम्हें भी प्रगट हो जायेगा कि तुम्हारे ताऊजी के इस कार्य से हिन्दुओं की

नाक व शाख कहां बचने पायगी।

किरण०—(उदास चित्त होकर) स्वामी ! यदि ताऊ जी के ये विचार हैं, तो महा अनर्थ हो जायेगा, नाथ कोई ऐसी तदबीर की जाये, जिससे उनके मन की मलीनता दूर हो जाये और वो अपने सन्धि के विचार को स्थागित करके पुनः अपने उसी विचार पर अचल हो जायें।

पृथ्वी०—हां प्रिये ! एक पत्र लिखकर पठाता हूं, जिसके द्वारा उनको चेताता हूं, उनका भ्रम दूर करके उनको उनका कर्तव्य सुझाता हूं।

किरण०—हां विचार तो ठीक है, परन्तु जब वो सन्धि पर तुले हैं तो वो आपके कहने पर कब ध्यान करेंगे।

पृथ्वी०—ये तो सत्य है परन्तु उद्योग करना तो मनुष्य का काम है, और ईश्वर के आधीन इसका परिणाम है।

किरण०—हां तो पत्र लिखिये, देरी न करिए।

(पृथ्वीसिंह को पत्र लिखना)

पृथ्वी०—लो प्राणाधिके ! ये पत्र एक दृष्टि से तुम भी पढ़ो और बताओ ठीक है ना।

किरण०—(पत्र पढ़ कर) हां स्वामी पत्र ठीक है। उनकी समझ में आ जायगा और मेरा विश्वास है कि इस पत्र के पढ़ते ही उनका भाव बदल जायेगा, हां परन्तु नाथ ये तो बताइये इस पत्र को उनके पास लेकर कौन जायेगा।

पृथ्वी०—मेरी राय में तो जो राजपूत पत्र लेकर आया था वोही वापिस लेकर चला जायेगा, क्योंकि वो महाराणा जी का सच्चा विश्वास पात्र है, कभी वो इस रहस्य को किसी को

नहीं बतायेगा (कुछ सोच कर) परन्तु वो तो, इस समय बादशाह ने कैद कर रक्खा है (पुनः सोच कर) अच्छा कोई बात नहीं, मैं अभी जाता हूं, और उसको छुड़ाकर लाता हूं। (प्रस्थान)

किरण०--(स्वयं) नाने ताऊजी पर क्या विपदा हुई, परमात्मा जाने किस दुख में उन्होंने इस नीच भाव को अपनाया है, अवश्य उन पर कोई महान संकट आया है, तभी तो उन्होंने सन्धि-पत्र लिख कर यहां पठाया है, अन्यथा वो कभी ऐसा नहीं कर सकते थे।

(पृथ्वीसिंह का मय राजदूत के साथ प्रवेश)

पृथ्वी०---प्रिय ये भी काम पूर्ण हो गया।

किरण०---आह ! स्वामी छुड़ा लाये।

पृथ्वी०---हां, परन्तु बड़ी युक्ति से इसकी रिहाई कराई (राजपूत से) लो भाई ! ये पत्र महाराणा तक पहुंचाना, परन्तु सावधान महाराणा के अतिरिक्त और किसी को यह पत्र न दिखाना, क्योंकि इसमें कुछ गुप्त रहस्य है, तुम्हें हिन्दुपति महाराणा प्रतापसिंह का विश्वास-पात्र जानकर इस काम का भार दिया है, लो जाओ होशियारी से ये पत्र महाराणा के पास पहुंचाओ।

राजपूत---जो आज्ञा।

(प्रस्थान)

पृथ्वी०---(नेपथ में घन्टे घड़ियाल की धुन सुनकर) देखो प्राण प्रिये ! शकुन भी इस समय शुभ हो रहे हैं (दोनों का ध्यान मग्न होकर) देखो भगवान् देखो तुम्हारे भक्त कैसे कष्ट पा रहे हैं, प्रभु उठो और भव भय-भंजन अपने भक्तों के

कष्ट मिटाओ, आओ गरुड़गामी शेष की शय्या छोड़ कर शीघ्र जाओ।

देखले भक्तों पे तेरे किस कदर अन्धेर है।
जल्द पर्दे से निकल भगवान अब क्या देर है॥
कब तलक बैठे रहोगे इस तरह खामोश तुम।
भक्त सब 'बेचैन' हैं प्रभु हो रूपोश तुम॥

(धीरे धीरे पर्दे का गिरना)

अंक तीसरा दृश्य तीसरा

स्थान—रावली की पहाड़ी

(हिन्दुपति महाराणा प्रतापसिंह का पर्वत की एक चट्टान पर चिन्तातुर बैठे नजर आना और पश्चाताप करना)

प्रताप०—(स्वयं) शोक ! मैंने देश की स्वाधीनता के लिए सब कुछ किया, किन्तु इतने पर भी फल कुछ न पाया, पहाड़ियों में मारा मारा फिरा, बनों में ठोकरें खाईं, घास-फूस की रोटी प्रेम से पाई; परन्तु विजय लक्ष्मी ही देखने में न आई, प्यारी सन्तान को भूखों मारा, परन्तु इनके असह्य दुख ने बेचैन बना दिया, इसी समय अकबर से सन्धि का विचार किया, लाचार, अकबर की दासता स्वीकार कर उसे मस्तक झुकाऊंगा, आह प्रताप तुझे हजार बार धिक्कार है, यदि यह आंखें बच्चों का कष्ट नहीं देख सकती थी तो इन आंखों को फोड़ डालता, हृदय की आहों को हृदय में दबा देता, बाहर न निकालता। परन्तु मलेक्ष

अकबर को सन्धि पत्र को लिखने से पहले ही कहीं डूब कर मर जाता, जिससे इस हिन्दुत्व पर धब्बा न आता। ओ अधम प्रताप तेरी इस नीचता पर संसार हंसेगा, संसार तुझे नारकी कहकर तेरी निन्दा करेगा, और कहेगा कि हजारों माई के लालों की जान व्यर्थ खपाई और स्वयं अकबर से सन्धि करके अपनी जान बचाई। प्रताप ! ओ पापात्मा प्रताप जो वीर वीर गति को प्राप्त हो गये क्या उनके हृदय में अपनी सन्तान का प्यार न था, क्या उनको प्रिय परिवार न था, क्या उन्हें सन्तान का मोह न सताता होगा, क्या उन्हें अपने कुटम्बियों का मोह नहीं आता होगा, हाय उन धर्मवीरों ने प्राण देकर अपने कर्तव्य की पूर्ति कर दिखाई, वास्तव में वो वीर वीर थे जिन्होंने मरते दम तक अपनी प्रतिज्ञा निभाई धन्य हैं उनके माता पिता शर्मकर ओ निर्लज्ज प्रताप शर्म कर। यदि कुछ मनुष्यता रखता है तो चुल्लू भर पानी डूब मर (कुछ सोच कर) नहीं झुकाऊंगा मैं गौ रक्षक होकर उस गऊ भक्षक मलेच्छ अकबर के सन्मुख कभी माथा नहीं नवाऊंगा, जब तक मेरी भुजाओं में बल है और हाथ में तलवार है, और जब तक मेरे जिस्म में क्षत्रियों के पवित्र रक्त का संचार है, और प्राण हैं तब तक कभी अकबर को अपना सम्राट् मान कर मस्तक नहीं नवाऊंगा।

(चिन्ता ग्रस्त हो जाना और एक दूत का आना)

दूत—महाराज ! दास का प्रणाम स्वीकार कीजिये, ये आपके नाम पत्र आया है सो ले लीजिये।

प्रताप—(एकदम चौंककर) पत्र ! पत्र मेरे नाम।

दूत—हां, पूज्य आपके नाम ही आया और कुमार पृथ्वीसिंह ने पठाया है।

प्रताप—कृष्णसिंह जी ! जरा पत्र पढ़कर सुनाइये, कुमर पृथ्वीसिंह ने क्या लिखा है बताइये ?

(कृष्णसिंह का पत्र पढ़ना और पृथ्वीसिंह के पत्र से राणा जी का संतुष्ट हो जाना और पृथ्वीसिंह को धन्य कहना)

प्रताप—आहा धन्य है वीर पृथ्वीसिंह, तुम्हारे माता पिता को जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया, तुमने अथाह यवनों में रहते हुए अकबर की दासता में रहते हुए भी जातीय गौरव का परिचय दे दिया। यदि तुम देहली दरबार में न होते तो कौन इस बात को दबाता, कौन मेरे सन्धि पत्र को जो कि मैंने मोहवश लिख भेजा था जाली बताता, और कौन मुझे पत्र द्वारा चेताकर मेवाड़ को पतन से बचाता। आज तुम्हारा यह काम जितना सराहूँ थोड़ा है, आज तुम्हारा जितना धन्यवाद करूँ उतना ही थोड़ा है।

पद्मा—स्वामी मैं न कहती थी कि आप ऐसा न कीजिये।

प्रताप—हां प्रिये ! उस दिन सन्तान के मोह ने मेरी बुद्धि को मलीन कर दिया था। (वीर राजपूतों की ओर संकेत करके) मेरे बहादुर शेरो मेवाड़ के दिलेरो।

जब तक घट में प्राण न रण में पीठ दिखाओ।
सन्मुख छाती खोल सेल सीने पर खाओ॥
लेकर शस्त्र हाथ अरि दल को मार भगाओ।
खण्ड खण्ड प्रचण्ड आज मद झाड़ हलाओ॥

कृष्ण०—महाराज अब आगे क्या करना है।

प्रताप—वीर कृष्णसिंह मारना या मरना है, तुम्हें ज्ञात है, न तो मेरे पास धन है और न बल है। केवल बात की लाज उस पारब्रह्म के हाथ है, इसलिए मेवाड़ का मालिक वो रघुनाथ है, इसको अन्तिम प्रणाम कर लिया जाए और और राजपूताने मरुस्थल को पाकर सोगती राज्य में चल कर शेष जीवन को व्यतीत किया जाए।

कृष्ण०—जो आपकी आज्ञा।

प्रताप—अच्छा तो अब व्यर्थ देर मत लगाओ, चलने का प्रबन्ध कराओ और इस मातृ भूमि को अन्तिम मस्तक नमाओ।

(राणा जी का पर्वत पर चढ़कर अन्तिम नमस्कार करना)

सब का गायन

छोड़ चले मेवाड़ की बस्ती फेर नहीं यहां आना होगा।
आयेंगे फिर भी आयेंगे भाग्य में अब जब आना होगा॥
ले प्रणाम हमारा अन्तिम बापा रावल जी की भूमि।
आज पृथक होते हैं तुझ से रो दृग नीर बहाना होगा॥
मातातेरी स्वाधीनता के हित सब कुछ जोर लगाकर हम।
सर्वस्व वार चले हम तुझ पर जाने कहां ठिकाना होगा॥
ईश्वर हम से रुष्ट हुआ है भाग्य हमारा पलट गया है।
आगे जो ललाट लिखा है फल वोही उनको पाना होगा॥
इस अभागे प्रतापका माता सब अपराध भुलाना दिल से।
पता नहीं 'बेचैन' को अपना किस दिन और कहां जाना होगा॥

(प्रताप और अन्य राजपूत दृगों से नीर बहा कर पहाड़ी से

नीचे उतर कर आते हैं। चलते हैं और रोते हैं मुड़ २ कर देखते जाते हैं। भामाशाह घोड़ा दौड़ाये पीछे पीछे आते हैं)

भामाशाह—(आवाज लगाकर) ओ क्षत्री कुल कमल भूषण, ओ हिन्दूपति मेवाड़ाधिपति महाराणा प्रतापसिंह जी थोड़ा ठहर कर मेरी बात सुनते जाओ, अपने पुराने सेवक की एक बात सुनते जाओ।

प्रताप—(घोड़ा रोक कर) हैं ये क्या ये तो भामाशाह दीखते हैं, मालूम नहीं ये इतने क्यों घबराये हुए आते हैं।

(भामाशाह का आकर घोड़े से उतर कर महाराणा प्रतापसिंह के चरणों में गिरना और महाराणा प्रतापसिंह का उठाना)

भामाशाह—स्वामी अपने सेवक की एक विनती स्वीकार कीजिए, नाथ मेरी ये अन्तिम बात तो मान ही लीजिये।

प्रताप—मन्त्री जी क्या मैंने आप की बात को कभी नहीं माना अब आपकी वृद्ध अवस्था, संग्राम में भाग लेना काल को निकट बुलाना है, इसलिए घर जाओ शेष आयु भजन में बिताओ।

भामाशाह—आप तो स्वामी बन व पर्वतों में ठोकरें खाते हैं और कई कई दिन भोजन नहीं पाते हैं और जिस दास का टुकड़ों से ये तन पला है उसको छोड़ कर आप कहाँ जाते हैं, आप तो स्वामी देश माता के उद्धार में अपना जीवन विताते हैं, और मुझे उल्टा घर पठाते हैं, धिक्कार है, मेरे घर जाने पर धिक्कार है। उस धन पर और खजाने पर, जो इस बुरे समय पर भी अपने स्वामी

के काम न आए।

प्रताप--मन्त्री जी आपका अभिप्राय मेरी समझ में नहीं आया।

भामाशाह--श्रीयुत अन्नदाता! एक बार मेरे कहने से मेवाड़ की ओर अपना रुख घुमाइये और जो धन मैंने व मेरे पूर्वजों ने आप के कोष से जमा किया है, वो ज्यों का त्यों अभी तक धरा है, आपका भण्डार भरा है उससे पच्चीस तीस हज़ार सेना को दस बारह वर्ष तक चला कर अपना कार्य भली भांति चलाइये और सेना समूह एकत्रित करके जन्म भूमि की रक्षा तथा हिन्दू धर्म की लाज बचाइये। आइये और लौट आइये।

प्रताप--मन्त्री जी! आप दाना होकर नादान होते हैं, भला जो धन मैंने अपने इन हाथों से दिया है, उसे मैं कैसे लूं। नहीं भामाशाह जी! ये तो मैं कदाचित नहीं कर सकता।

भामाशाह--महाराजाधिराज! मैं देखता हूं जिस मातृभूमि की स्वाधीनता के वास्ते आपने अपना सर्वस्व लगा दिया, अपनी धन सम्पत्ति तथा अपना जीवन और अपनी संतान के मोह तक को भुला दिया तो क्या मैं उस मातृभूमि के लिए कुछ भी न लगाऊं, दीनानाथ मेरा भी धर्म है कि मैं भी उस स्वदेश की सेवा में मर जाऊं। प्रभु मुझे मातृभूमि की सेवा से वंचित न कीजिये, अतएव मेरा कहना मान लीजिये।

प्रताप—भामाशाह जी! तुम्हारी देश भक्ति धन्य है आज तुम भी मातृभूमि के ऋण से उऋण हो गए।

भला जिस धन की खातिर हर मनुष्य तकलीफ पाता है।

भला जिस धन की खातिर भाई भाई को मिटाता है॥

भला जिस धन के कारण देश और परदेश जाता है।
वोही धन आज तुमने भी लगाया देश भक्ति में॥
तुम्हें धन्य भामाशाह जो काम आया है भक्ति में॥
(बहुत से भील व राजपूतों का महाराणा की जयघोष करते हुए प्रवेश)

सब—महाराणा जी आप हमें इस प्रकार अनाथ करके कहीं मत जाइये। आइये पूज्य! हमारे कहने से एक बार लौट आइये, जब हमारी भुजाओं में बल है और ये (तलवार दिखाते हुए) लोहा हमारा सहायक है तब तक हम आप को कहीं न जाने देंगे।

प्रताप—यदि आप लोगों की मेरे साथ सहानुभूति है और आप लोगों की यही इच्छा है तो मैं आप से कभी बाहर नहीं हूं, मैं तो आपका सेवक हूँ, इस समय सेवा पर तत्पर हूं।

आर्य वीरो बढ़ो अब दृढ़ हो मैदान में।
शस्त्र अपने खींच करके खेल जाओ जान में॥
केसरी बाना पहन कर मारो रण में हाथ तुम।
दुष्ट दल के अब झपटकर काट डालो माथ तुम॥
कर पतन यवनों को हृदय की मेटो पीर तुम।
कर दो डालो दुश्मनों का बीच में से चीर तुम॥
दो मिटा दुष्टों को और डंका बजाओ धर्म का।
गेरुवा झण्डा फहरा पालन करो निज कर्म का॥

सब—जय हिन्दूपति महाराणा प्रतापसिंह की जय।

(इस प्रकार जय घोष करना और उछलते कूदते प्रस्थान)

❁❁❁❁

स्थान—अकबर का दरबार

अकबर—(स्वयं) ओफ अगर ये खबर वाकयी सही है कि प्रताप सिंह के बूढ़े मन्त्री भामाशाह ने अपने सात पुश्त की दौलत बेखौफ होकर प्रतापसिंह को देकर सेना एकत्रित करादी है तो बस अब खैरियत किनारा कर गई।

(नवाब खानखाना का प्रवेश)

खानखाना—हुजूर ने जो सुना है वाकयी सही है और ये मैंने सुना है कि प्रतापसिंह ने नई सेना की भरती करनी शुरू करदी है।

अकबर—तो कोई तरकीब बताओ और मुझे इस आने वाली मुसीबत से बचाओ, वो इसमें कामयाब न हो कोई ऐसी तजवीज चलाओ।

खानखाना—हुजूर मेरी नाकिस राय में तो ये आता है कि मेवाड़ से फौजें हटा लीजे, आलीजाह ! प्रतापसिंह बहादुर है ऐसे बहादुर को अब आजाद जिन्दगी बशर करने दीजे।

अकबर—नहीं, कभी नहीं, मैं कभी ऐसा नहीं कर सकता ऐसा करने से वो अपने आपको जाने क्या समझेगा और फिर और भी ऊपर आ पड़ेगा।

खानखाना—हुजूर मानिये, या न मानिये, हम तो आपकी बहबूदी के लिये समझाते हैं, क्योंकि आपका नमक खाते हैं।

अकबर—अच्छा अगर आपकी यही राय है तो शहबाज खां को वापिस बुला लिया जाये, खत भेजकर फौजों को वहां से हटा लिया जाये।

चोबदार—(प्रवेश करके) आलीजाह एक सरदार मेवाड़ से आया है और कोई खास खबर लाया है।

अकबर— जाओ उसे हमारे हजूर में ले आओ।

कासिद—(प्रवेश करके) हजूर गजब हो गया, तमाम मेवाड़पर राजपूतों का कब्जा हो गया।

अकबर—आगे आओ, वाकिया क्या है, सही सही सुनाओ।

कासिद—आलीजाह ! प्रतापसिंह लड़ते २ घबरा गया था और भाग कर पीछा छुड़ाना ही चाहता था कि उसके पुराने वजीर ने अपनी सब दौलत देकर पैर जमा दिए और मुगल सिपाह के छक्के छुड़ा दिये, बाजखां को मय फौज के मार कर अब्दुल्ला को कत्ल कर दिया, जयपुर के एक मशहूर शहर को बरबाद कर दिया, हजूर उसकी फितरतें क्या बयान करूं। तमाम मेवाड़ पर कब्जा कर लिया है।

अकबर—खामोश, नमकहराम दुश्मन की तारीफ करके मेरा तन बदन जलाता है, जाओ जैसे भी हो उसका मय खानदान को जहन्नुम में पहुंचाओ, तमाम मेवाड़ में आग लगाओ और नवाब खान खाना आप भी फौज ले कर जाइये।

अब तलक खामोश था पर अब हुआ लाचार मैं।
तेरे टुकड़ें करने को खेंचूंगा अब तलवार मैं॥

खान०—हुजूर जिद न ठानिए, इस वक्त मेरी बात मानिए।

अकबर—कुछ नहीं, मुझे ये बातें नहीं सुहातीं, मैं अपने दिल के गुबार जरूर मिटाऊंगा, चाहे कुछ भी हो जाए, उस गुस्ताख को उसकी गुस्ताखी का मजा चखाऊंगा।

(सीन ट्रांसफर होकर कुम्भलमेर का दुर्ग महाराणा प्रतापसिंह मृत्यु शैया पर पड़े हैं, सब भील राजपूत घेरे खड़े हैं, महाराणा सब को समीप बुलाकर समझाते हैं)

प्रताप०—वीरो ! मुझे अपने मरने का कुछभी ख्याल नहीं, कुछ भी

मलाल नहीं, यदि ख्याल है तो ये कि इस मेवाड़ की पवित्र भूमि को कौन शत्रुओं से बचायेगा, कौन मेरे वीर व्रत को निभायेगा, कौन महाराणा सांगा और हमीरसिंह की जन्मभूमि को इन दुष्टों में पददलित होने से बचायेगा। शोक है अमरसिंह से उम्मीद करना मानो पत्थर को जोंक लगाना है, उसने क्या प्रतिज्ञा पूर्ति को निभाना है, जो थोड़े कष्ट को भी सहन नहीं कर सकता।

कृष्ण०—महाराणा जी आप इतने निराश न हूजिए, कुंवर अमरसिंह पर विश्वास कीजिये और हम सब उनके साथ हैं भगवान को साक्षी करके कहते हैं, आपकी प्रतिज्ञा को निभायेंगे और पूरा करके दिखायेंगे।

वीर व्रत जो आपका उसको निभायेंगे जरूर।
मातृभूमि को अवश्य स्वतन्त्र कर देंगे जरूर॥

अमर०—पिता जी मुझे इतना भीरु न समझिये, याद रखिये आपका पुत्र आपकी प्रतिज्ञा पर जान लड़ा देगा, अथवा अपने प्राण भी देकर आपकी प्रतिज्ञा को निभा देगा।

प्रताप—शाबाश, अब मरने के बाद मुझे अवश्य ही शान्ति प्राप्त हो जायगी। (हिचकी लेकर) राम............

(सबका शोक में हो जाना, अमरसिंह का अधीर होना सीन ट्रांसफर होना, स्वर्ग में महाराणा जी का झूलते हुए दिखाई देना, देवताओं व देवांगनाओं का नृत्य गायन करना, पुष्प वर्षादि होना। टेवल पर ड्राप का गिरना।)

॥ इति समाप्त ॥

मुद्रक—यादव प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली।